योगी आदित्यनाथ
मुख्यमंत्री, उत्तर प्रदेश

डॉ. सतीश चन्द्र द्विवेदी
राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार)
बेसिक शिक्षा

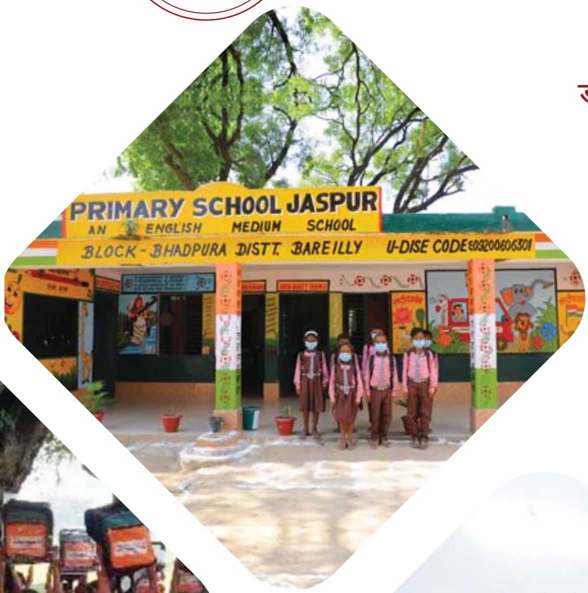

बेसिक शिक्षा विभाग, उत्तर प्रदेश की मासिक पत्रिका

प्रेरणा

सर्व शिक्षा अभियान
सब पढ़ें सब बढ़ें

वर्ष 1 | चतुर्थ अंक
नवम्बर-दिसम्बर संयुक्ताँक-2020

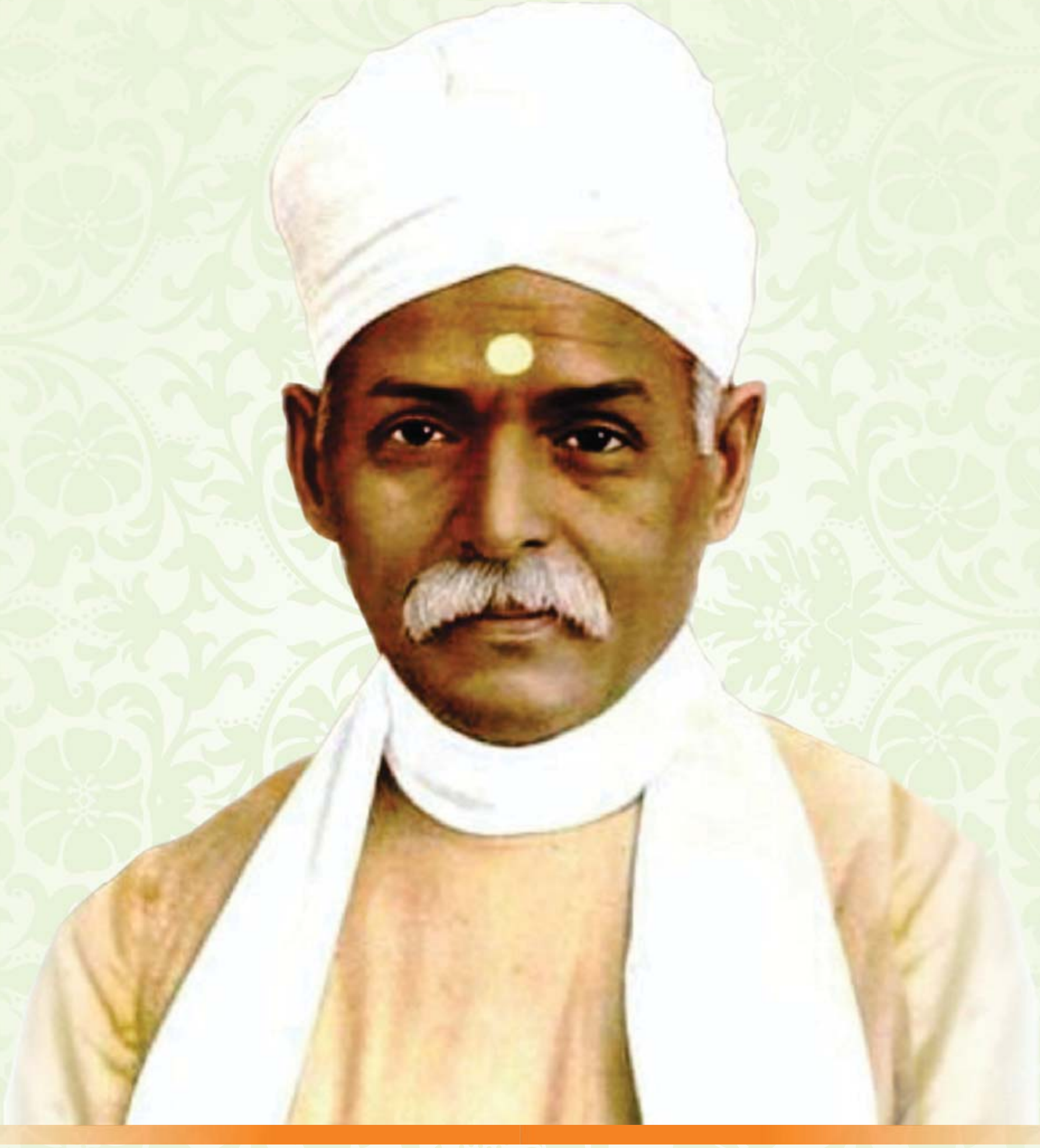

देश को काशी हिन्दू विश्वविद्यालय जैसा अनमोल उपहार देने वाले देशभक्त,
महान नेता, वकील, पत्रकार, समाज सुधारक और उच्चकोटि के विचारक

महामना पंडित मदन मोहन मालवीय

को उनकी

पुण्य तिथि : 12 नवम्बर पर

शत्-शत् नमन्

सर्व शिक्षा अभियान

सब पढ़ें सब बढ़ें

बेसिक शिक्षा विभाग, उत्तर प्रदेश की मासिक पत्रिका

प्रेरणा

वर्ष 1 | चतुर्थ अंक | नवम्बर-दिसम्बर संयुक्ताँक 2020

बेसिक शिक्षा विभाग, उत्तर प्रदेश

विद्या भवन, निशातगंज, लखनऊ

ईमेल : prernapatrikabasicedu@gmail.com

फोन नं. : 0522-2780391

संरक्षक

डॉ. सतीश चन्द्र द्विवेदी,
मा. राज्य मंत्री, (स्वतंत्र प्रभार)
बेसिक शिक्षा, उत्तर प्रदेश

सह संरक्षक

श्रीमती रेणुका कुमार, IAS
अपर मुख्य सचिव, बेसिक शिक्षा,
उत्तर प्रदेश शासन

निर्देशन

श्री विजय किरन आनन्द, IAS
महानिदेशक
स्कूल शिक्षा, उत्तर प्रदेश

प्रधान सम्पादक

डॉ. सर्वेन्द्र विक्रम बहादुर सिंह,
शिक्षा निदेशक (बेसिक)
उत्तर प्रदेश

नोडल अधिकारी,

श्री राजेश कुमार शाही,
सहा. उप निदेशक,
मध्यान्ह भोजन प्राधिकरण

सम्पादक

डॉ. के.बी. त्रिवेदी

सम्पादक मण्डल

1. निदेशक, एस.सी.ई.आर.टी., उ.प्र. लखनऊ
2. निदेशक साक्षरता, साक्षरता निदेशालय, उ.प्र. लखनऊ
3. श्री मुमताज अहमद, वित्त नियन्त्रक म.भो.प्रा., उ.प्र. लखनऊ
4. डॉ. पवन कुमार सचान, प्राचार्य डायट, लखनऊ
5. श्री गुरमिन्दर सिंह, सलाहकार समग्र शिक्षा अभियान, लखनऊ

प्रेरणा पत्रिका प्रकाशन सामग्री संकलन समिति

1. श्रीमती दीपा तिवारी, सहायक निदेशक, एस.सी.ई.आर.टी., लखनऊ – अध्यक्ष
2. श्री राजेश कुमार शाही, सहा. उप निदेशक, म.भो.प्रा., उ.प्र. लखनऊ – सदस्य
3. श्री गुरमिन्दर सिंह, सलाहकार, समग्र शिक्षा अभियान लखनऊ – सदस्य
4. श्री बाल गोबिन्द मौर्य, वरिष्ठ प्रवक्ता डायट लखनऊ – सदस्य
5. श्रीमती पूनम उपाध्याय, प्रवक्ता डायट, लखनऊ – सदस्य

प्रेरणा पत्रिका के वितरण सम्बन्धी समिति

1. श्री अब्दुल मुबीन, सहायक निदेशक, बेसिक शिक्षा निदेशालय लखनऊ – अध्यक्ष
2. श्री संजय कुमार शुक्ल, प्रशासनिक अधिकारी, समग्र शिक्षा अभियान लखनऊ – सदस्य
3. श्रीमती पुष्पा रंजन, प्रशासनिक अधिकारी, एस.सी.ई.आर.टी. लखनऊ – सदस्य

टंकण सहयोग

1. श्री संजय कुमार, कम्प्यूटर आपरेटर, म.भो.प्रा., लखनऊ

विषय-सूची

क्र.सं.	विषय	पृष्ठ सं.
1.	मा. मुख्यमंत्री, उ.प्र., योगी आदित्यनाथ जी द्वारा शिक्षकों को नियुक्ति पत्र वितरण	5
2.	बेसिक शिक्षा मंत्री द्वारा डिजिटल क्लासरूम का शुभारम्भ	7
3.	आपरेशन कायाकल्प : जनपद–झाँसी	8
4.	कोविड–19 के दौरान ऑनलाइन शिक्षण का सफल प्रयास	11
5.	शिक्षा के साथ–साथ स्वावलम्बन का विकास	13
6.	बालिकाओं में जीवन कौशल का विकास : मीना मंच	14
7.	मीना (कविता)	20
8.	बेसिक शिक्षा के नये आयाम : मानव सम्पदा पोर्टल	21
9.	पाठ्यक्रमों की रोचक प्रस्तुति : सुनो कहानी	22
10.	डी.एल.एड. प्रशिक्षुओं के लिये ऑनलाइन कक्षायें : एक सार्थक प्रयास	24
11.	बेसिक शिक्षा में "कक्षा–कक्षों का परिवर्तित स्वरूप"	25
12.	बेसिक शिक्षा में खेलों को बढ़ावा	29
13.	साधारण विद्यालय को जिले के आदर्श विद्यालय में बदला	30
14.	साधनविहीन विद्यालय से सर्वश्रेष्ठ विद्यालय की यात्रा	31
15.	समाज के सहयोग से विद्यालय को साधन सम्पन्न बनाया	32
16.	विद्यालय द्वारा सोलर प्लेट से रोबोट का विकास	33
17.	उच्च प्राथमिक स्तर हेतु गणित प्रयोगशाला	34
18.	असल धुरी	35
19.	पैरेन्ट टीचर मीटिंग से जागरूक हुये अभिभावक	36
20.	हौसलों की उड़ान : अभिभावकों को सिखाया अक्षर ज्ञान	37
21.	डिजिटल लर्निंग : एक प्रयास	38
22.	स्कूल मैगजीन : उड़ान–एक नई पहल	39
23.	ऑनलाइन शिक्षा में प्रोजेक्टर का प्रयोग /'मन' (कविता)	40
24.	बुजुर्गों से सीखें	41
25.	'शक्ति टीम' बनी विद्यालय की शक्ति	42
26.	कर्तव्यबोध : नई तकनीक के साथ शिक्षण	43
27.	आदित्य फिर स्कूल आने लगा	44
28.	खेल द्वारा लघुत्तम समापवर्त्य का ज्ञान/भाषा की जान : विराम चिन्ह (कविता)	45
29.	जनसहयोग से विद्यालय में स्मार्ट क्लास की स्थापना	46
30.	स्कूल तब और अब : एक सराहनीय प्रयास	47
31.	सुर्खियों में बेसिक शिक्षा	48

सम्पादकीय

शिक्षा में सबसे ज्यादा ताकत होती है। जिससे पूरी दुनिया को बदला जा सकता है। शिक्षा रूपी इस ताकत को पाने में प्रारम्भिक शिक्षा एक महत्वपूर्ण कड़ी है। प्रारम्भिक शिक्षा की बुनियाद जितनी मजबूत होगी भविष्य की शिक्षा उसी पर आधारित होगी। उत्तर प्रदेश में प्रारम्भिक शिक्षा के लिये बेसिक शिक्षा विभाग द्वारा समस्त 75 जनपदों में 158895 प्राथमिक एवं उच्च प्राथमिक विद्यालय स्थापित किये गये है। इन विद्यालयों में लगभग 1.60 करोड़ बच्चे शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं। इस वर्ष कोविड–19 आपदा के कारण यद्यपि स्कूलों में बच्चों का आना प्रतिबन्धित है फिर भी विद्यालयों में कार्यरत अध्यापकों द्वारा विद्यार्थियों को ऑनलाइन शिक्षा की कड़ी से जोड़ा गया है। किसी भी आपदा की परिस्थिति में जन–धन के साथ–साथ सामाजिक और मानसिक रूप से अपार क्षति होती है जिसका अनुमान लगाना मुश्किल होता है लेकिन ये आपदायें मनुष्य को नई राह भी दिखाती हैं। इस आपदा की परिस्थिति में शिक्षा जगत में डिजिटलाइजेशन हुआ वह शायद साधारण परिस्थिति में सम्भव नहीं था। आज अधिकाँश प्राथमिक विद्यालयों में कक्षायें स्मार्ट क्लास रूप में परिवर्तित हुयी हैं जिनका उपयोग छात्र–छात्राओं को घर बैठे शिक्षित करने में हुआ है। हमारे विद्यालयों में कार्यरत अध्यापक भी नई तकनीक में पांरगत हो रहे है। विद्यालयों में अध्यनरत छात्र एन्ड्रावायड फोन, दूरदर्शन, दीक्षा ऐप एवं और यूट्यूब के माध्यम में शिक्षित हो रहे हैं। शिक्षा जगत में इस प्रकार के सभी परिवर्तन देश में शिक्षा की बुनियाद को और मजबूत बनाने में सहायक होगें।

बेसिक शिक्षा विभाग द्वारा प्रकाशित मासिक पत्रिका प्रेरणा नियमित रूप से हो रहे इन परिवर्तनों की साक्षी बन रही है। पत्रिका के इस अंक में भी इसकी झलक दिखाई पड़ेगी। बेसिक शिक्षा विभाग में कार्यरत अध्यापक–अध्यापिकायें छात्रों को अपना सर्वश्रेष्ठ ज्ञान देने का प्रयास तो करते ही है साथ ही बेसिक स्कूलों की तस्वीर बदलने में भी सहभागी बन रहे हैं। इस अंक में ऐसे शिक्षकों के उत्कृष्ट कार्यों को सबके समक्ष लाने का प्रयास किया गया है। छात्राओं के सशक्तिकरण के लिये कस्तूरबा गांधी विद्यालय और मीना मंच एक सशक्त माध्यम है। इसे भी इस अंक में स्थान दिया गया है। अनेक शिक्षकों द्वारा शिक्षा के क्षेत्र में किये जो रहे नवाचारों और उनकी सृजनात्मकता को भी इस अंक में समायोजित किया गया है।

प्रेरणा पत्रिका का यह अंक बेसिक शिक्षा विभाग के समस्त कर्मयोगियों को प्रेरणा प्रदान करते हुये बेसिक शिक्षा विभाग का नाम प्रदेश और देश में उज्ज्वल बनाने का मार्ग प्रशस्त करेगा।

(डॉ. सर्वेन्द्र विक्रम बहादुर सिंह)
शिक्षा निदेशक (बेसिक)

मा. मुख्यमंत्री, उत्तर प्रदेश, योगी आदित्यनाथ जी द्वारा बेसिक शिक्षा विभाग में नव नियुक्त 35590 शिक्षकों को नियुक्ति पत्र वितरण कार्यक्रम

दिनांक 05 दिसम्बर, 2020

विगत 5 दिसम्बर, 2020 को माननीय मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने बेसिक शिक्षा विभाग के 35590 नव नियुक्त शिक्षकों को नियुक्ति पत्र वितरित कर मिशन रोज़गार की शुरूआत की। इस अवसर पर बेसिक शिक्षा राज्य मंत्री (स्वतन्त्र प्रभार) डॉ. सतीश चन्द्र द्विवेदी, अपर मुख्य सचिव बेसिक शिक्षा, श्रीमती रेणुका कुमार, महानिदेशक स्कूल शिक्षा, श्री विजय किरन आनन्द उपस्थित रहे। नियुक्ति पत्र देते हुये माननीय मुख्यमंत्री ने सभी शिक्षकों से आदर्श स्कूल स्थापित करने में अपना पूरा योगदान देने की अपील की और कहा कि शिक्षक बच्चों में आदर्श नैतिक मूल्य स्थापित करें और सामाजिक सुधार के साथ–साथ बच्चों में राष्ट्रीयता की भावना और सदाचार का विकास करें।

फोटो फीचर

फोटो फीचर

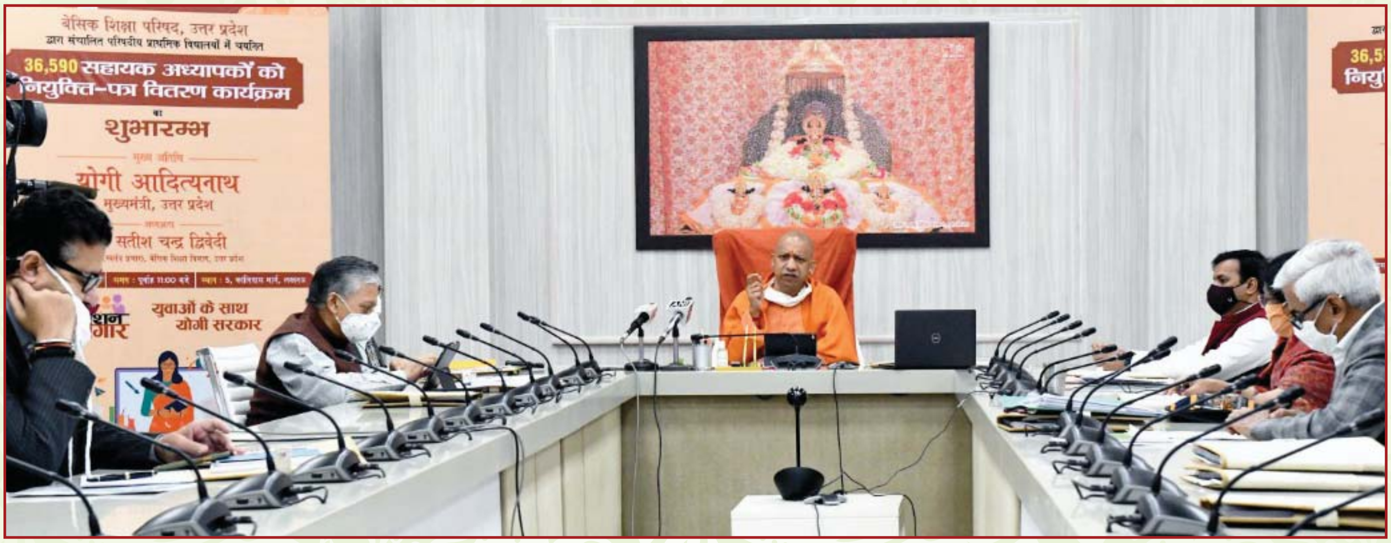
बेसिक शिक्षा परिषद, उत्तर प्रदेश
36,590 सहायक अध्यापकों को
का
शुभारम्भ
योगी आदित्यनाथ
मुख्यमंत्री, उत्तर प्रदेश
सतीश चन्द्र द्विवेदी
युवाओं के साथ
योगी सरकार

HARDOI
युवाओं के साथ
योगी सरकार

बेसिक शिक्षा मंत्री द्वारा डिजिटल क्लासरूम का शुभारम्भ

दिनाँक 15 दिसम्बर, 2020 को प्रदेश के बेसिक शिक्षा राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) डॉ. सतीश चन्द्र द्विवेदी द्वारा राजधानी लखनऊ के नगरक्षेत्र स्थित नरही बेसिक विद्यालय में डिजिटल क्लासरूम का उद्घाटन किया गया। लखनऊ जिले के 50 विद्यालयों में एक निजी बैंक द्वारा कार्पोरेट सोशल रिस्पाँन्सबिलिटी फंड के अर्न्तगत स्मार्ट टी.वी. लगवाकर डिजिटल क्लासरूम बनवाये जा रहे हैं। उद्घाटन के अवसर पर अपने सम्बोधन में माननीय मंत्री ने प्रदेश के सभी प्राइमरी स्कूलों में एल्युमिनाई एसोसियेशन बनाने का आहवान किया। इस एसोसियेशन से विद्यालय के पूर्व छात्रों को जोड़ा जायेगा और उनकी मदद से विद्यालय को सँवारने का कार्य किया जायेगा। उन्होंने इस अवसर सभी महिला शिक्षकों को सुकन्या योजना के अर्न्तगत छात्राओं के खाता खुलवाने के भी निर्देश दिये। इस अवसर पर निदेशक (बेसिक शिक्षा) डॉ. सर्वेन्द्र विक्रम बहादुर सिंह ने बताया कि परिषदीय विद्यालयों के बच्चों को आधुनिक और तकनीकी शिक्षा प्रदान किये जाने का प्रयास किया जा रहा है।

फोटो फीचर

आपरेशन कायाकल्प : जनपद–झाँसी

बेसिक शिक्षा एक नजर में

जनपद झाँसी में आपरेशन कायाकल्प के अन्तर्गत सभी विद्यालयों में पंचायती राज विभाग, खनिज निधि, स्थानीय निकाय, सी.एस.आर. (कॉर्पोरेट सोशल रिसपाँन्सबिलिटी) फन्ड, स्कूल कम्पोजिट ग्रान्ट एवं अन्य विभागों से समन्वय स्थापित कर अवस्थापना सुविधाओं का संतृप्तिकरण सुनिश्चित किया जा रहा है। लक्षित 14 घटकों हेतु कार्य अनेक विद्यालयों में पूर्ण हो गये हैं। शेष में कार्य प्रगति पर है। अद्यतन जनपद के 700 से अधिक विद्यालयों में विभिन्न अवस्थापनात्मक कार्य कराते हुए विद्यालयों के वातावरण को छात्र–छात्राओं के अध्ययन के अनुकूल व सुरम्य बनाये जाने का कार्य किया जा चुका है। अवशेष अवस्थापना सुविधाओं का कार्य वर्तमान में गतिमान है। बेसिक शिक्षा अधिकारी श्री हरिवंश कुमार ने बताया कि युद्ध स्तर पर कार्य चल रहा है जिसे शीघ्र ही पूरा कर लिया जायेगा। जनपद झाँसी में विद्यालयों की स्थिति इस प्रकार हैं।

कुल विद्यालय–1776, नगरक्षेत्र–09, परिषदीय प्राथमिक विद्यालय–1202, परिषदीय पू.मा. विद्यालय–564, 5 स्टार परिषदीय विद्यालय–36, 4 स्टार–521, 3 स्टार–816, 2 स्टार–274, 1 स्टार–129, छात्र नामांकन–140715, शिक्षक संख्या–4097, शिक्षा मित्र–1600, अंशकालिक अनुदेशक–488।

आपरेशन कायाकल्प के अन्तर्गत कुछ विद्यालय में कराये गये कार्यों की एक झलक

पूर्व माध्यमिक विद्यालय पुढ़ी

पूर्व माध्यमिक विद्यालय गाता

प्राथमिक विद्यालय गढ़ीकर गाँव

पूर्व प्राथमिक विद्यालय ढिवकई

प्राथमिक विद्यालय बंकापहाड़ी

प्राथमिक विद्यालय रानापुरा

प्राथमिक विद्यालय निपान

प्राथमिक विद्यालय अतरौली

कोविड–19 के दौरान ऑनलाइन शिक्षण का सफल प्रयास

कस्तूरबा गांधी आवासीय बालिका विद्यालय, जनपद–लखनऊ

जनपद में स्थित 08 विकास खण्ड माल, मलिहाबाद, काकोरी, बक्शी का तालाब, चिनहट, गोसाईगंज, मोहनलालगंज एवं सरोजनीनगर में कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालय संचालित है। जिनका विवरण निम्नवत है –

क्र. सं.	विकास खण्ड का नाम	ग्राम का नाम जहाँ विद्यालय स्थापित है	किस कक्षा तक की शिक्षा दी जा रही है
1	सरोजनी नगर	ग्राम–हसनपुर खेवली	कक्षा–8
2	मोहनलालगंज	ग्राम–गुजौली	कक्षा–8
3	मलिहाबाद	ग्राम–टेढेमऊ	इण्टरमीडिएट
4	माल	ग्राम–तिवारीखेड़ा	इण्टरमीडिएट
5	कोकोरी	ग्राम–सरोसा भरोसा	इण्टरमीडिएट
6	गोसाईगंज	ग्राम–शिवलर	इण्टरमीडिएट
7.	चिनहट	ग्राम–नन्दपुर सतरिख रोड	इण्टरमीडिएट
8.	बख्शी का तालाब	ग्राम–कुम्हराँवा	

इन विद्यालयों में 10 से 14 वर्ष की स्कूल न जाने वाली छात्रायें, स्कूल में अनामाँकित ग्रामीण छात्राओं को प्रवेश दिया जाता है। इन छात्राओं को विद्यालय में आवासीय सुविधा के साथ–साथ नाश्ता, खाना, यूनीफार्म, जूता, मोजा, अण्डर गारमेण्ट्स निःशुल्क उपलब्ध कराये जाते हैं। प्रत्येक विद्यालय में 100 छात्राओं को प्रवेश मिलता है। इस प्रकार 08 विद्यालयों में लगभग 800 छात्रायें अध्ययनरत हैं।

इन विद्यालयों में अध्ययनरत छात्राओं को पढ़ाई के साथ–साथ अन्य गतिविधियों के बारे में जानकारी प्रदान की जाती है। बालिका सशक्तीकरण के अन्तर्गत बालिकाओं को मार्शल आर्ट्स प्रशिक्षण के अन्तर्गत जूडो, कराटे, लाठी भांजना इत्यादि का प्रशिक्षण भी प्रशिक्षकों के द्वारा समय–समय पर प्रदान किया जाता है।

सत्र 2020–21 में कोविड–19 के कारण विद्यालयों के बंद होने के कारण इन विद्यालयों में अध्ययनरत छात्राओं को ऑनलाइन पढ़ाया जा रहा है। अध्ययनरत छात्राओं तक सोशल मीडिया के माध्यम से ऑनलाइन शिक्षण का सफल प्रयास किया गया है। ऑनलाइन माध्यम से विद्यालयों में अध्ययनरत छात्राओं को मेरी उड़ान, मिशन शक्ति, सड़क सुरक्षा सप्ताह, बेटी बचाओ–बेटी पढ़ाओं कार्यक्रमों की जानकारी दी गयी। विद्यालय की कुछ छात्राओं के पास मोबाइल की अनुपलब्धता होने के कारण ऐसी छात्राओं को पढ़ाने के लिये इन विद्यालयों से पूर्व में पास आउट छात्राओं के माध्यम से इन्हें गोद लेकर पढ़ाया जा रहा है। जिससे प्रत्येक छात्रा तक शिक्षण सामग्री पहुंच रही है। इसके अतिरिक्त शैक्षिक गुणवत्ता बढ़ाने हेतु सभी कस्तूरबा गांधी आवासीय बालिका विद्यालयों में स्मार्ट क्लास की स्थापना की गयी है, जिसके माध्यम से इन विद्यालयों में कार्यरत समस्त अध्यापकों को ऑनलाइन प्रशिक्षित किया जा रहा है।

उ.प्र. सरकार द्वारा नवरात्रि की शुभ तिथियों दिनांक 17.10. 2020 से 25.10.2020 के मध्य मिशन शक्ति कार्यक्रम के अन्तर्गत जनपद में संचालित कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालयों में महिलाओं एवं बालिकाओं की सुरक्षा सम्मान एवं स्वालंबन के लिये विभिन्न गतिविधियाँ

संचालित की गयी। इन गतिविधियों में कोविड–19 के प्रोटोकाल का पालन करते हुये समस्त कस्तूरबा गांधी आवासीय बालिका विद्यालयों में अभिभावकों को विद्यालय में बुलाकर उन्हें हेल्प लाइन नम्बरों की जानकारी मॉकड्रिल, सेफ टच और अनसेफटच के बारे में फिल्म के माध्यम से

बताया गया। महिलाओं एवं बालिकाओं की सुरक्षा एवं संरक्षा महिलाओं पर हो रहे हिंसा के सम्बन्ध में जागरूक करने हेतु उन्हें पाक्सो एक्ट, मौलिक अधिकार एवं बाल विवाह के दुष्परिणामों की भी जानकारी प्रदान की गयी। मीना मंच के

माध्यम से अभिभावकों को बाल अधिकार के बारे में बताया गया कि प्रत्येक किशोर–किशोरी को कौन–कौन से अधिकार प्राप्त हैं और कौन–कौन से अधिकार निषेध है। इस कार्यक्रम में अभिभावकों ने भी अपने विचार प्रकट किये।

लखनऊ जनपद के समस्त कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालयों में छात्राओं के सर्वांगीण विकास हेतु खेलकूद की

गतिविधियाँ भी नियमित रूप से संचालित की जा रही हैं। छात्राओं को आत्मरक्षा हेतु जूडो कराटे का प्रशिक्षण भी दिलाया जा रहा है।

विशेष अवसरों पर छात्राओं के इक्पोजर भ्रमण व सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है। सांस्कृतिक कार्यक्रमों के लिये बालिकाओं को प्रेरित कर प्रशिक्षण भी दिया जा रहा है। छात्राओं में वैज्ञानिक अभिरूचि विकसित करने के लिये विज्ञान प्रदर्शनी का भी आयोजन समय–समय पर किया जाता है। ❑

शिक्षा के साथ–साथ स्वावलम्बन का विकास

कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालय, जनपद–जालौन

कस्तूरबा गांधी आवासीय बालिका विद्यालय कोंच जनपद–जालौन में अध्ययनरत आर्थिक रूप से कमजोर एवं प्रतिभाशाली छात्राओं में शिक्षा के साथ–साथ उनमें छिपी हुयी प्रतिभा को निखारने और स्वावलम्बी बनाने के लिये शिक्षणेत्तर गतिविधियों को बढ़ावा दिये जाने का अभिनव प्रयास किया गया है। इस प्रकार के उन्मुखीकरण से बालिकाओं में आत्मविश्वास का विकास होगा और भविष्य में वे अपने लक्ष्य को प्राप्त कर सकेंगी। इस उद्देश्य से निम्न कार्यक्रम चलाये गयेः–

समर कैम्प–कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालय नगर क्षेत्र कोंच में जिलाधिकारी डॉ मन्नान अख्तर, जिला विद्यालय निरीक्षक श्री भगवत प्रसाद पटेल और तत्कालीन जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी श्री राजेश कुमार शाही के मार्गदर्शन में ग्रीष्मकालीन अवकाश में समर कैम्प का आयोजन किया गया था। 15 दिवसीय समर कैम्प का शुभारम्भ विगत वर्ष 19 मई, 2019 को किया गया था। समर कैम्प में विद्यालय की कुल 88 छात्राओं द्वारा प्रतिभाग किया गया। इन सभी छात्राओं को उनकी रूचि के अनुसार विभिन्न ग्रुपों में बाँटा गया। छात्राओं को उनकी रूचि के अनुसार अलग–अलग विधाओं के प्रशिक्षण दिलाये गये। समर कैम्प में छात्राओं को पेन्टिंग, वाल पेन्टिंग, ब्यूटीशियन, क्राफ्ट, बागवानी, खाद्य आधारित कुटीर उद्योग, जैविक खाद उत्पादन और नृत्य गायन का प्रशिक्षण विभिन्न विशेषज्ञों द्वारा दिया गया। प्रशिक्षण के साथ ही उन्हें पोषण, स्वास्थ्य, बालिका सुरक्षा

और सशक्तिकरण के बारे में भी विशेषज्ञों द्वारा जानकारी दी गयी। प्रशिक्षण कार्यक्रम का समापन छात्राओं के सांस्कृतिक कार्यक्रम से हुआ। कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालय कोंच द्वारा दूसरा महत्वपूर्ण कार्यक्रम किशोरी समाधान योजना के अर्न्तगत किया गया।

किशोरी समाधान योजना–विद्यालय में अध्ययनरत कुछ छात्रायें जो कक्षा–8 पास कर लेती थीं, लेकिन आर्थिक मजबूरी के कारण आगे पढ़ने की इच्छा होते हुये भी पढ़ नहीं पाती थीं। जिलाधिकारी डॉ मन्नान अख्तर द्वारा इस प्रकार की 21 छात्राओं को गोद लेकर उनके लिये निःशुल्क आवासीय सुविधा, कापी–किताब, ड्रेस तथा विद्यालय आने जाने के लिये साइकिलों की व्यवस्था करायी गयी। इन सभी छात्राओं का आगे की शिक्षा के लिये वृन्दावन इण्टर कालेज कोंच में प्रवेश दिलाया गया। छात्राओं के अभिभावक के रूप मुझे जिम्मेदारी दी गयी, जिसे मैंने स्वेच्छा से स्वीकार किया है। सभी 21 बालिकाये अपनी पढ़ाई में संलग्न होकर वे अपने भविष्य के सपनों को साकार कर रही है। ❑

सौजन्य से–
वन्दना वर्मा वार्डेन
कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालय कोंच जनपद–जालौन

बालिकाओं में जीवन कौशल का विकास : मीना मंच

मीना मंच, विद्यालयों में बालिकाओं के लिए एक ऐसा मंच है जो उन्हें अपनी बात खुलकर कहने के अवसर देता है। यह बालिकाओं को शिक्षा से जुड़ने, नियमित विद्यालय आने और लिंग आधारित भेदभावों के प्रति सजग रहने के लिये प्रोत्साहित करता है। ''मीना मंच'' परोक्ष रूप से बालिकाओं में आत्मविश्वास का विकास, समस्याओं के समाधान ढूढ़ने का कौशल एवं नेत्तृव क्षमता जैसे मूलभूत जीवन कौशल का विकास करने का अवसर देता है।

उद्देश्य– बालिकाओं को आगे बढ़ने के लिए विद्यालयों में यथोचित एवं विशेष अवसर देना जिससे उनमें आत्मविश्वास बढ़े, जीवन कौशल का विकास हो, नेतृत्व क्षमता बढ़े, वे समाजिक मसलों पर अपने स्वयं के विचार रख सकें, और सबसे अधिक वे निर्बाध रूप से अपनी विद्यालयी शिक्षा पूरी कर सकें। मीना मंच के स्पष्ट उद्देश्य हैं–

1. समस्त बालिकाओं को शिक्षा से जोड़ना और उनका ठहराव बनाये रखना। बालिकाओं को सीखने, पढ़ने–लिखने एवं सह–शैक्षिक गतिविधियों से जोड़ने हेतु अधिकतम अवसर/सामूहिक सहयोग देना।
2. बालिकाओं की सुरक्षा पर चर्चा करना एवं आपसी सहयोग से समाधान करना।
3. जेण्डर भेदभाव एवं सामाजिक कुरीतियों पर समझ विकसित करना और बालिकाओं को इन मुद्दों पर अपने विचार व्यक्त करने हेतु एक मंच प्रदान करना।
4. आत्मविश्वास एवं जीवन कौशल का विकास करने के अवसर निश्चित रूप से उपलब्ध कराना। बालिकाओं में नेतृत्व तथा सहयोग की भावना विकसित करना, साथ ही किशोरावस्था संबंधी जिज्ञासाओं की अभिव्यक्ति एवं समाधान हेतु मंच देना।
5. बालिका शिक्षा एवं विकास के लिए समुदाय को जागरूक करना। सामुदायिक स्वास्थ्य, पोषण एवं स्वच्छता पर जानकारी एवं जागरूकता फैलाना।

मीना मंच का गठन

मीना मंच में विद्यालय की कक्षा 6 से 8 तक की समस्त बालिकाएं एवं बालक सदस्य होगें। अतः मीना मंच द्वारा आयोजित की जाने वाली चर्चाओं और गतिविधियों में समस्त बच्चे मंच के नेतृत्व में प्रतिभाग करेगें। विद्यालय की किसी एक महिला शिक्षिका को इसके संचालन की जिम्मेदारी सौंपी जाती है, जो कि सुगमकर्ता कहलाती है। सुगमकर्ता मीना मंच की गतिविधियों का संचालन स्वयं नहीं करेगी बल्कि बालिकाओं को मार्गदर्शन देगी जिससे बालिकाएं स्वयं के स्तर पर गतिविधियों का संचालन कर सकें। महिला अध्यापिका की अनुपस्थिति में ही पुरूष अध्यापक को सुगमकर्ता का भार सौंपा जा सकेगा। किन्तु पुरूष सुगमकर्ता होने की स्थिति में, प्रत्येक दो माह में आवश्यक रूप से किसी अध्यापिका/महिला अधिकारी/महिला कार्यकर्ता की विजिट विद्यालय में करानी होगी जिससे कि बालिकाएं विशेष मुद्दों पर खुलकर बात कर सकें। **विद्यालय में मीना मंच बनाये जाने के बाद यह स्थायी मंच रहेगा जिसका संचालन प्रत्येक वर्ष होगा और संचालन की प्रक्रिया भी निर्देशानुसार यथावत रहेगी।**

मीना मंच द्वारा विभिन्न गतिविधियों के संचालन एवं विभिन्न मुद्दों पर चर्चा करवाने का कार्य बालिकाओं का एक छोटा समूह करेगा जो ''मीना मंच समिति'' कहलाएगा। मीना मंच समिति में विद्यालय में अध्ययनरत सक्रिय किशोरियों को सदस्य बनने हेतु प्रेरित किया जायेगा, जो अन्य बालिकाओं के लिए किसी न किसी रूप से सहायता कर रही हों यथा–

- बहुत दूरी से विद्यालय पहुँचने वाली बालिका,
- नियमित विद्यालय में आने वाली बालिका,
- पढ़ाई के लिए घर वालों को समझा–बुझाकर विद्यालय आने वाली बालिका,
- अपनी सहेली को प्रेरित कर विद्यालय लाने वाली, उत्कृष्ट शिक्षा परिणाम वाली, गतिविधियों में श्रेष्ठ प्रदर्शन करने वाली बालिका,
- विभिन्न गतिविधियों में हिस्सा लेने वाली बालिका, आदि।

मीना मंच समिति में निम्नानुसार 20 बालिका और 6 बालक सदस्य होंगेः–

कक्षा	बालिका सदस्य	बालक सदस्य
कक्षा 8	5 बालिकाएं	2 बालक
कक्षा 7	5 बालिकाएं	2 बालक
कक्षा 6	5 बालिकाएं	2 बालक
कक्षा 5	3 बालिकाएं	–
कक्षा 4	2 बालिकाएं	–
कुल	**20 बालिकाएं**	**6 बालक**

- यथासंभव मीना मंच समिति के सदस्य विद्यालय की अन्य समितियों के सदस्य भी हों ताकि समितियों के कार्यों में आपसी सहयोग एवं समन्वय बना रहे।
- यदि विद्यालय में 20 से कम बालिकाएं भी हैं तो विद्यालय की समस्त बालिकाओं और 6 बालकों को सम्मिलित कर मीना मंच का गठन किया जाये।

मीना मंच समिति के सदस्यों का चुनाव

उच्च प्राथमिक स्तर पर प्रत्येक कक्षा से 5 बालिकाओं और 2 बालकों का चयन किया जायेगा। इन चयनित सदस्यों में से प्रत्येक कक्षा में एक प्रेरक (बालिका) और दो सह–प्रेरक (एक बालिका और एक बालक) का चुनाव किया जायेगा। प्राथमिक स्तर पर कक्षा 5 और कक्षा 4 से क्रमशः 3 और 2 बालिकाएं मीना मंच की सदस्या होगी और वे प्राथमिक कक्षाओं का नेतृत्व करेंगी। ये सभी प्रत्येक कक्षा हेतु प्रेरक का रोल निर्वाह करेंगी। मीना समिति के सदस्यों का चुनाव कक्षाध्यापक द्वारा कक्षा में ही बच्चों की सहमति लेते हुए किया जा सकेगा। प्रेरक एवं सह–प्रेरक का चुनाव प्रत्येक वर्ष होगा। समिति के सदस्यों का कार्यकाल एक वर्ष के लिए होगा। मीना मंच समिति के अध्यक्ष एवं उपाध्याक्ष का चयन चयनित प्रेरक एवं सह–प्रेरक द्वारा विद्यालय में अध्ययनरत बालिकाओं में से किया जायेगा जो कि आवश्यक रूप से बालिका ही होगी।

- प्रेरक–प्रत्येक कक्षा से समस्त बच्चों द्वारा चयनित एक बालिका।
- सह–प्रेरक–प्रत्येक कक्षा से समस्त बच्चों द्वारा चयनित एक बालिका और एक बालक।
- अध्यक्ष–समस्त प्रेरक एवं सह–प्रेरक द्वारा उच्च प्राथमिक स्तर से चयनित कोई एक सक्रिय बालिका।
- उपाध्यक्ष–समस्त प्रेरक एवं सह–प्रेरक द्वारा उच्च प्राथमिक स्तर से चयनित कोई एक सक्रिय बालिका।

मीना (मंच) समिति–पद एवं कार्यदायित्व

मीना मंच समिति, मीना मंच के संचालन हेतु कार्यों का विभाजन करेगी जिससे कि सभी बालिकाओं को प्रतिनिधित्व करने और प्रतिभाग करने का समान अवसर प्राप्त हो :

प्रेरक के कार्य :

- कक्षा के समस्त बच्चों के साथ मीना मंच की कार्ययोजना अनुसार कार्य करना, चर्चाएं आयोजित करना। आवश्यकताओं को समिति में रखना।
- सह–प्रेरक को दायित्व सौंपना और समन्वय बनाकर बालिकाओं को विभिन्न गतिविधियों से जोड़े रखना।
- उपस्थिति चार्ट बनाना और अनियमित बालिका एवं बालक से सम्पर्क करना और कक्षाध्यापक को सचेत करना।
- लाइब्रेरी की किताबों, मीना किट की पुस्तकों एवं फ्लिप बुक को कक्षा में लाकर सभी से बारी–बारी से वाचन कराना।

मीना मंच अध्यक्ष व उपाध्यक्ष के कार्य :

- समय–समय पर मंच की बैठकें आयोजित करना, बैठकों का संचालन करना।
- बैठकों के मुद्दे तय करना तथा कार्य योजना का प्रस्ताव देकर जिम्मेदारी बाँटना।
- समिति अपनी पहली बैठक में आगामी तीन माह की कार्य योजना बनायेगी तथा रणनीति तय करेगी।
- पहली बैठक में आगामी कार्यक्रमों तथा बैठकों की तिथि निर्धारित कर सभी को सूचित कर देना चाहिए।
- गाँव की ड्रॉप आउट बालिकाओं एवं अनियमित आने वाली बालिकाओं की संपूर्ण जानकारी बैठकों में रखना।
- बालिकाओं को विद्यालय लाने/नियमित उपस्थिति बनाने हेतु सभी की सहभागिता से रणनीति तय करना।
- समय–समय पर बैठकों और चर्चाओं के अतिरिक्त विद्यालय एवं समुदाय में विभिन्न गतिविधियाँ/कार्यक्रम आयोजित करने हेतु योजना बनाना और जिम्मेदारी तय करना।
- सभी बैठकों/आयोजनों की लिखित रिपोर्ट तैयार करना जिसमें परिणाम (Out Come) का उल्लेख हो। यह कार्य बालिकाओं की मदद से सुगमकर्ता करेगी।

मीना मंच के कार्य एवं गतिविधियां

विद्यालय में मीना मंच के गठन के बाद, निहित उद्देश्यों के साथ यह मंच लगातार सक्रिय रहे, इस हेतु बालिकाओं के नेतृत्व में विद्यालय स्तर पर विभिन्न गतिविधियां आयोजित की जायेंगी और सुगमकर्ता का दायित्व होगा कि वे बालिकाओं को प्रस्तावित गतिविधियां आयोजित करने में सहयोग एवं मार्गदर्शन देकर बालिकाओं को प्रोत्साहित करें और आत्मविश्वास बढ़ायें। अपने उद्देश्यों की प्राप्ति हेतु मीना मंच, सुगमकर्ता और मीना मंच समिति के मार्गदर्शन में निम्नलिखित कार्य एवं गतिविधियों का संचालन करेगी।

गतिविधियां	क्या और कैसे करें	माह
	विद्यालय स्तरीय	
प्रवेशोत्सव आयोजित करना	मीना मंच समिति द्वारा 19 जून से 30 जून के मध्य अपने–अपने मोहल्लों में शिक्षिकाओं के मार्गदर्शन में रैली निकालना, बैठक करना, पोस्टर बनाना व चिपकाना, आउटऑफ विद्यालय बालिकाओं हेतु घर–घर जाना, नव नामाँकित बालिकाओं का प्रवेश के प्रथम दिन तिलक कर स्वागत करना, आदि।	जून
उपस्थिति चार्ट बनाना	प्रत्येक माह प्रत्येक कक्ष में प्रेरक एवं सह–प्रेरक द्वारा चार्ट पर सभी बच्चों के नाम के सामने मासिक उपस्थिति दर्शायी जायेगी। माह के अंतिम कार्यदिवस पर, उस माह में 20 दिन या उससे अधिक दिन विद्यालय आने वाले बच्चों को "हरा स्टार" दें। 15 से 19 दिन विद्यालय आने वाले बच्चों को "पीला स्टार" दें। कक्षाध्यापक "हरा एवं पीला स्टार" पाने वाले बच्चों के लिए कक्षा/प्रार्थनासभा में तालियां बजवायें। महत्वपूर्ण है कि लगातार अनुपस्थित रहने वाली बालिकाओं को विद्यालय में नियमित रूप से उपस्थित रहने हेतु अभिभावकों से संपर्क कर अध्यापक/मीना मंच के सदस्य प्रेरित करें।	प्रत्येक माह
मीना वाचनालय का संचालन	सभी विद्यालयों में वाचनालय कक्ष बनाया जायें, जो कि पुस्तकालय का हिस्सा होगा। स्थान के आभाव में इसे किसी कोने अथवा रैक में स्थापित किया जा सकता है। इसमें मीना किट में उपलब्ध कहानियों की पुस्तकें तथा विद्यालय में उपलब्ध अन्य पुस्तकें रखी जायें एवं मीना कार्नर विकसित किया जाये। वाचनालय का संचालन पूर्णतः मीना मंच के पास होगा। यह उन्हें एक समूह के रूप में निरन्तर कार्य करने का अवसर देगा। वाचनालय के उपयोग हेतु नियम व प्रक्रिया (समय और दिन) का निर्धारण सुगमकर्ता शिक्षिका की सलाह से मीना मंच के सदस्य करें। वाचनालय का उपयोग पुस्तकें पढ़ने हेतु किया जाये। यह गतिविधि बच्चों में पढ़ने की आदत के विकास हेतु है अतः विद्यालय की समय सारिणी में वाचनालय हेतु सप्ताह में कोई दो दिन कालाँश निर्धारित किया जाये। ताकि बालिकायें वाचनालय कक्ष में बैठकर कहानियाँ पढ़ सकें। शिक्षक इन कहानियों एवं उन पर होने वाली चर्चाओं को शिक्षण प्रक्रिया का हिस्सा भी बना सकते हैं। वाचनालय की पुस्तकों की सूचना एवं पुस्तक पढ़ने वाली बालिकाओं का विवरण संधारित किया जाए। रोटेशन पर मीना मंच समिति द्वारा वाचनालय के संचालन हेतु नामित 6 सदस्य। समिति–प्रति–तिमाही हेतु दो सदस्यीय समिति को दायित्व दिया जाय।	सत्र पर्यन्त

समूह में चर्चा	मीना मंच समिति के सदस्य मीना कहानियों का पठन एवं क्रियात्मक गतिविधि समूह में (कक्षा में प्रतिमाह) करेगें। कहानी पठन से पूर्व सुनाने वाली बालिका मीना समिति के सदस्यों के साथ कहानी सुनाने का अभ्यास करें तथा कहानी से सबंधित प्रश्नों को समझ लें। एक कहानी सुनाने के लिए कम से कम 3–5 बालिकायें तैयारी करें। कहानी सुनाने के लिए बालिकाओं का चयन रोटेशन के आधार पर किया जाए जिससे सभी बालिकाओं को पढ़ कर सुनाने का अवसर मिले। समूह में चर्चा मीना मंच की सदस्य बालिकायें स्वतन्त्र रूप से करें इसमें शुरूआती कहानियों पर चर्चा के समय सुगमकर्ता सहयोग कर सकती है किन्तु एक–दो कहानियों के उपरान्त बालिकाओं को स्वयं कहानी का चयन तथा अन्य तैयारी हेतु प्रेरित किया जाये। विभिन्न आकार–प्रकार के मास्क का उपयोग कहानी को जीवंत रूपान्तरण करने एवं क्रियात्मक गतिविधि के लिए किया जाये। कहानियों पर होने वाली चर्चाओं एवं बालिकाओं द्वारा तैयार लिखित सामग्री को पोर्टफोलियो का हिस्सा बनाया जाये। बालिकाओं की मौखिक अभिव्यक्ति को उनके आँकलन में एक साक्ष्य के रूप में उपयोग किया जा सकता है।	मासिक
कला जत्था / नुक्कड़ नाटक / शनिवारीय कायर्क्रम	मीना की कहानियों पर बालिकायें नाटक तैयार करें, उसकी स्क्रिप्ट लिखें, और यथासंभव मास्क के साथ नाटक प्रस्तुत करें। मीना की कहानियों के अतिरिक्त अन्य मुद्दों पर भी नाट्क प्रस्तुत किया जा सकता है। सत्र में ऐसे कार्यक्रम प्रत्येक पे.टी.एम. / एस.एम.सी. बैठक में किये जायें। इसके अतिरिक्त समुदाय में जाकर भी ऐसी प्रस्तुतियां साल में दो बार की जा सकेंगी अथवा शनिवारिय कार्यक्रम का हिस्सा बनाया जाये।	त्रैमासिक 24 सितम्बर मीना दिवस
कहानी वाचन व लेखन	मीना मंच अपने प्रेरकों के माध्यम से प्रत्येक बाल–सभा (शनिवारीय कायर्क्रम) के दिन कहानी वाचन और लेखन की प्रतियोगितायें आयोजित करेंगी जिसमें बालक–बालिकायें स्वयं कहानियां बनायगें और लाईब्रेरी की पुस्तकों से कहानियों का वाचन करवायेंगी।	प्रतिमाह
वॉल पत्रिका बनाना	मीना मंच की प्रेरक अपनी कक्षाओं का एक मासिक वॉल (भित्ती) पत्रिका बनायेगी। जिसमें सभी बालिकाएं अपने अनुभवों को लिखेंगी और वह पूरे माह कक्षा में लगा रहेगा। उक्त मासिक वॉल पत्रिका के अलावा मीना मंच अपना समाचार पत्र भी बनायेगी। विद्यालय में होने वाली सभी शैक्षणिक एवं शिक्षणेत्तर गतिविधियों पर बालक एवं बालिकाओं दोनों के अनुभवों को एकत्रित कर मीना समाचार पत्र तैयार किया जायेगा। हर गतिविधि के साथ मीना मंच के सदस्य उससे संबंधित दस्तावेज इकट्ठे करेंगे तथा माह फरवरी में इसको समेकित करके मीना समाचार पत्र बनायेगें एवं रिकार्ड सुरक्षित रखें।	प्रतिमाह फरवरी
विद्यालयी प्रतियोगितायें	मीना मंच विद्यालय के अन्य मंचों से समन्वय कर विभिन्न गतिविधियों के संचालन का नेतृत्व करेंगी जैसे खेलकूद प्रतियोगितायें, प्रार्थना सभा एवं बाल सभा का संचालन। मीना मंच अनियमित आने वाले बच्चों / बालिकाओं के लिए विशेष खेलकूद गतिविधियों का आयोजन करेगी। 24 सितम्बर को मीना दिवस व 24 जनवरी को राष्ट्रीय बालिका दिवस का आयोजन किया जायेगा।	(वर्ष में दो बार) 24 सितम्बर व 24 जनवरी

शैक्षणिक प्रतियोगितायें	मीना मंच सत्र में दो बार बालिकाओं हेतु (कक्षा स्तर पर, विद्यालय स्तर पर) छोटी प्रतियोगिताओं का आयोजन करेगा। प्रतियोगितायें भाषा, व्यावहारिक विज्ञान, गणित पर की जायेंगी।	(वर्ष में दो बार)
वार्तायें	सुगमकर्ता समुदाय से विभिन्न क्षेत्रों में काम करने वाली रोल मॉडल महिलाओं व पुरूषों को बच्चों से चर्चा करने हेतु आमंत्रित करेंगी। और पूरे विद्यालय के साथ अथवा समूह में चर्चा करवायेंगी।	त्रैमासिक
शैक्षिक भ्रमण	बालिकाओं के व्यवहारिक ज्ञान को सम्वर्धित करने के उद्‌देश्य से बालिकाओं को महिला सुगमकर्ता आसपास के बैंक, डाकघर, पुलिस स्टेशन, सेकण्डरी विद्यालय, ग्राम पंचायत, ऑफिस, एन.जी.ओ. आदि का भ्रमण करवायेंगी ताकि उनका आत्मविश्वास बढ़े। यह गतिविधि पाठ्यक्रम का हिस्सा भी है।	(वर्ष में दो बार)
मीना दिवस	मीना मंच की सदस्य 24 सितम्बर को विद्यालय में मीना दिवस का आयोजन करेंगी। मीना के पात्र की संकल्पना 24 सितम्बर को ही मूर्त रूप में आई थी। मीना दिवस को ब्लॉक स्तरीय मीना सम्मेलन के रूप में मनाया जायेगा। इस आयोजन का मुख्य उददेश्य बालिकाओं की सृजनशीलता, बौद्धिक क्षमता, लेखन एवं कलात्मक अभिव्यक्ति को प्रोत्साहित करना है।	वार्षिक
अपने काम का लेखा—जोखा	मीना मंच प्रेरक, मंच की प्रत्येक गतिविधि के उपरान्त सुगमकर्ता के सहयोग से कार्यवाही विवरण तैयार करेंगे। समस्त गतिविधियों का विवरण एक ही रजिस्टर में संधारित किया जाये। गतिविधियों को विस्तार से न लिख कर बिंदुवार ही लिखना है। समस्त गतिविधियों के आयोजन उपरान्त सत्रांत में मंच के सभी सदस्य मिलकर रजिस्टर में दर्ज किये गये कार्यों की समीक्षा करेगें। इसी समीक्षा बैठक में सभी मंच स्वमूल्याकंन भी कर सकते हैं।	वार्षिक
	समुदाय स्तरीय	
अभिभावक दिवस (पीटीए बैठक के दिन)	मीना मचं अध्यापिकाओं के साथ मिलकर पी.टी.ए. बैठक को सार्थक बनायेंगे। इसकी पूर्व तैयारी के तौर पर अनियमित बालिकाओं की सूची तैयार करेगें। बालिकाओं के सीखने की प्रगति को अभिभावकों के समक्ष सरल तरीके से रखने हेतु पोर्टफोलियो तैयार करने में अध्यापिकाओं की मदद करेगें। अभिभावक विद्यालय आयें इस हेतु अन्य बच्चों की मदद से मीना मंच द्वारा आमंत्रण पत्र तैयार करना और उसे व्यक्तिगत पहुँचाने के कार्य हेतु पहल करना।	त्रैमासिक
दादी—नानी दिवस	मीना मंच के सदस्य विद्यालय में दादी, नानी दिवस आयोजित करेगें ताकि समाज की वरिष्ठ महिलाओं (जोकि बालिकाओं की दादी—नानी है) के ज्ञान एवं समझ का उपयोग बच्चों की नियमित उपस्थिति, शिक्षा की अनिवार्यता के महत्व को जन—जन तक पहुँचाने के लिए किया जा सके। इसमें दादी—नानी शिक्षा के महत्व से संबंधित लोकगीत एवं कहानियां मीना मंच के सदस्यों को सुना सकती है।	जनवरी 24 जनवरी राष्ट्रीय बालिका दिवस
किस्सागोई	समुदाय में कई लोग होते हैं जो सार्थक, प्रेरणास्पद किस्सों, कहानियों, बातों को सुनाने में माहिर होते हैं। ऐसे लोगों को किस्सागोई या कहानी कहने, बात कहने के लिए आमंत्रित करें जिसमें बच्चे एवं अभिभावक दोनों भाग लें।	(वर्ष में दो बार)

मोहल्ला बैठकें	मीना मंच के सदस्यों के समूह अपने–अपने क्षेत्रों में सुगमकर्ता के निर्देशन में मोहल्ला बैठकें आयोजित करेगें। इन बैठकों में माता–पिता के साथ अनामाँकित बच्चों एवं उन बच्चों को भी शामिल किया जायेगा, जिनके विद्यालय छोड़ने की आशंका हो। ये मोहल्ला बैठकें प्रवेश के समय से एक माह पहले तथा उस समय से एक माह पहले जब आमतौर पर बच्चों की उपस्थिति अनियमित होने लगती है, आयोजित की जानी चाहिए। उदाहरण के लिए फसल की कटाई के समय या त्यौहारों के समय। ये बैठके वर्ष में दो बार आयोजित की जायेगी– अर्द्धवार्षिक परीक्षा से पूर्व एवं अर्द्धवार्षिक परीक्षा के पश्चात।	सितम्बर जनवरी
बड़ी बैठकें	मीना मंच के सदस्य बड़ी मोहल्ला बैठकें सुगमकर्ता के साथ आयोजित करेगें इन बैठकों में गांव/बस्ती के सभी माता–पिता, दादा–दादी, नाना–नानी, जनप्रतिनिधियों एवं बच्चों को बुलाकर ऐसे लोगों को भी इस बैठक में शामिल किया जा सकता है जो शिक्षा के महत्व को जन–जन तक पहुंचाने में मदद कर सकते हों। इस अवसर पर शिक्षा से संबंधित योजनाओं के बारे में जानकारी दी जायेगी। उल्लेखनीय है कि सितम्बर एवं नवम्बर माह में फसल कटाई के कारण अधिकाँश बच्चे विद्यालय से अनुपस्थित रहते हैं। अतः इन बैठकों का आयोजन विशेष रूप से उसी समय किया जाये।	सितम्बर नवम्बर
अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस	मीना मंच के सदस्यों सहित विद्यालय में अध्ययनरत समस्त बालक–बालिकाओं के मध्य मीना मंच द्वारा सामाजिक बुराइयों के प्रति सचेत करने हेतु विद्यालय में नाटक मंचन, कहानी वाचन, प्रेरणास्पद रोल मॉडल महिलाओं, उच्च अध्ययनरत बालिकाओं, महिला अधिकारी, प्रशासनिक अधिकारी, गृहणी डॉक्टर एवं अन्य महिला वक्ता को आमंत्रित करके वार्ताएं करवाई जायें।	प्रत्येक वर्ष 8 मार्च

मीना
(कविता)

आओ बहनों तुम्हें सुनाएं कहानी मीना मंच की,
इस मंच से बात करो नारी शिक्षा उत्थान की ।

युनिशेफ द्वारा संचालित, इस कार्यक्रम को अपनाना है,
हर बच्ची बने मीना, इस उद्देश्य को पाना है ।
नौ वर्षीय बालिका, जिसका काल्पनिक नाम मीना है,
देखो मिट्ठू, राजू और मीना बातें करते काम की ।।
इस मंच से बात करो नारी शिक्षा उत्थान की ।

२४ सितम्बर,१९९० से आयी, विद्यालय और समाज में,
६ बालक और १४ बालिकायें, होती मीना समूह में ।
होती एक पावर एंजिल, शक्ति जिसके काम में ।
मिले कुछ अधिकार विशेष, बालिका हित के ध्यान में
देखो ये तस्वीर है अपने जूनियर मीना मंच की ।
इस मंच से बात करो नारी शिक्षा के उत्थान की ।

प्राथमिक स्तर पर हुआ पदार्पण, दो हजार उन्नीस में,
गठन में होती बालिकायें सारी, मीना समूह निर्माण में ।
मिले सुरक्षा और शिक्षा, अपने घर परिवार में,
रहे न अज्ञानता और अशिक्षा, अब किसी समाज में ।
एक वर्ष ही रहना है, कार्य कारणी मीना मंच की ।।
इस मंच से बात करो नारी शिक्षा उत्थान की ।

अंध विश्वास दूर भगाओ, जीवन कौशल को अपनाओ,
भ्रूण हत्या, दहेज प्रथा, कुरीतियों को दूर भगाओ ।
रहे निरोगी काया सबकी, योगासन को अपनाओ,
नहीं किसी का हो शोषण, आत्मसुरक्षा को बतलाओ ।
गुड टच-बैड टच को समझाकर, बात बताए काम की ।।
इस मंच से बात करो नारी शिक्षा उत्थान की ।

बाल-अधिकार, नारी सुरक्षा, को एक अभियान बनाना है,
कोमल, खुशी मूवी को दिखाकर, जागरूक सबको बनाना है ।
पाक्सो एक्ट बताकर, किशोर-किशोरी को समझना है,
चाइल्ड हेल्पलाइन नंबर, १०९८ को बताना है ।
खेलकूद और स्काउट गाइड, गतिविधि है मीना मंच की ।।
इस मंच से बात करो नारी शिक्षा उत्थान की ।
आओ बहनों तुम्हें सुनाएं कहानी मीना मंच की ।

प्रतिमा उमराव (स.अ.)
कम्पोजिट विद्यालय अमौली
जनपद–फतेहपुर

बेसिक शिक्षा के नये आयाम : मानव सम्पदा पोर्टल

बेसिक शिक्षा विभाग द्वारा प्राथमिक एवं उच्च प्राथमिक शिक्षा की दशा और दिशा सुधारने के लिये विगत कुछ वर्षों से अनेक सकारात्मक परिवर्तन किये गये हैं। उन्हीं परिवर्तनों में एक महत्वपूर्ण परिवर्तन है ''मानव सम्पदा पोर्टल'' का विकास। इस पोर्टल का विकास बेसिक शिक्षा विभाग में कार्यरत लाखों शिक्षकों तथा अन्य स्टॉफ की सेवाओं के बेहतर प्रबन्धन तथा सेवा पुस्तिकाओं के रखरखाव, उपस्थिति एवं पेरोल की समस्याओं के त्वरित निवारण हेतु किया गया है।

प्रदेश के प्राथमिक एवं उच्च प्राथमिक विद्यलयों में अध्यापन कर रहे लगभग 5.60 लाख शिक्षकों तथा बेसिक शिक्षा विभाग में कार्यरत अन्य कर्मियों का मानव सम्पदा पोर्टल के स्वतंत्र सर्वर पर डाटाबेस सुरक्षित किया गया है। जिसका उपयोग विभागीय गतिविधियों एवं कर्मचारियों के कल्याण में किया जा सकेगा। पोर्टल के माध्यम से समस्त शिक्षकों एवं कर्मियों की सेवा पुस्तिका का रख–रखरखाव भी सुनिश्चित किया जा रहा है। पोर्टल पर शिक्षकों एवं कर्मियों के शैक्षिक अभिलेखों का रिकार्ड भी सुरक्षित किया गया है।

मानव सम्पदा पोर्टल के माध्यम से शिक्षकों और कर्मियों के वेतन वितरण और वेतन स्लिप प्राप्त करने की व्यवस्था को सुगम बनाया गया है। अब समस्त कर्मियों को समय से वेतन वितरण के साथ पे–स्लिप भी प्राप्त होगी, जिससे वेतन विसंगति सम्बन्धी समस्याओं का निराकरण आसान हो गया है। कर्मियों एवं शिक्षकों के सुपर एनुएशन एवं एरियर भुगतान सम्बन्धी प्रक्रिया भी ऑनलाइन पोर्टल के माध्यम से ही सम्पन्न किये जाने की प्रक्रिया गतिमान है।

पूर्व में शिक्षकों एवं प्रधानाध्यापकों की परफारमेन्स के मूल्यांकन की व्यवस्था मानव आधारित होने के कारण त्रुटि होने की सम्भावना रहती थी। मानव सम्पदा पोर्टल के माध्यम से एक शासनादेश निर्गत कर तकनीकी फ्रेमवर्क आधारित व्यवस्था संचालित की गयी है, जिसके माध्यम से अब शिक्षकों के प्रदर्शन का मूल्यांकन फ्रेमवर्क के आधार पर त्रुटिरहित हो सकेगा, जिसका प्रयोग शासन द्वारा व्यवस्था के प्रबन्धन में किया जा सकेगा।

इस पोर्टल के लिये सभी शिक्षकों, बी0ओ0 और बेसिक शिक्षा अधिकारियों के उपयोग के लिये यूनिक आई0डी0 उपलब्ध करायी गयी है।

मानव सम्पदा पोर्टल का शुभारम्भ करते हुए मा. मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ साथ में बेसिक शिक्षा राज्यमंत्री, (स्वतंत्र प्रभार) डॉ. सतीश चन्द्र द्विवेदी

शिक्षकों और कर्मियों के अवकाश आवेदन और उनकी स्वीकृति सम्बन्धी समस्याओं के निस्तारण के लिये एक M–स्थापना एप भी विकसित किया गया है, जिसके माध्यम से शिक्षक अवकाश आवेदन कर सकते हैं। उसी एप पर उसकी स्वीकृति भी त्वरित गति से प्राप्त हो जायेगी। इस एप के माध्यम से जनवरी, 2020 से अब तक लाखों शिक्षकों के अवकाश आवेदनों की स्वीकृति जारी की गयी है। इस एप में शिक्षक अपने वेतन का विवरण देख सकते हैं और आवश्यकतानुसार डाउनलोड भी कर सकते हैं। ❑

सौजन्य से–
अजीम अहमद
सिस्टम एनॉनिलस्ट
सर्व शिक्षा अभियान, लखनऊ

पाठ्यक्रमों की रोचक प्रस्तुति : सुनो कहानी

राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद

कहानी सुनना सभी बच्चों को बहुत अच्छा लगता है। प्राचीन काल से ही सामाजिक, आर्थिक एवं विषयगत समझ को विकसित करने हेतु घर–परिवार में कहानी सुनने–सुनाने की परम्परा रही है। कहानियों के माध्यम से परिवार के सदस्यों द्वारा बच्चों में नैतिक एवं मानवीय मूल्यों का विकास किया जाता रहा है। कहानी सुनाना एक महत्त्वपूर्ण शिक्षण विधा भी रही है। जिसका प्रयोग आचार्य एवं गुरू अपने आश्रम/गुरूकुल में किया करते थे। शिक्षण प्रक्रिया में कहानी सुनाने की विधा को प्रोत्साहित करने तथा कहानी के माध्यम से शिक्षण प्रक्रिया को रोचक बनाने के उद्देश्य से राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद, उत्तर प्रदेश, लखनऊ द्वारा वर्ष 2017–18 से आरम्भिक स्तर पर कक्षावार, विषयवार विकसित Learning Outcomes पर आधारित 'कहानी सुनाने की प्रतियोगिता' का आयोजन किया जा रहा है। इस प्रतियोगिता में शिक्षकों द्वारा राज्य में प्रचलित पाठ्यपुस्तकों की कहानियों, स्वरचित कहानियों तथा अन्य स्त्रोतों से ली गयी Learning Outcomes आधारित कहानियों को तैयार कर प्रस्तुत किया जाता है।

यह प्रतियोगिता दो स्तरों पर आयोजित की जाती है। प्रथम स्तर पर यह प्रतियोगिता जनपद स्तर पर जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, में आयोजित की जाती है। द्वितीय स्तर पर, जनपद स्तर पर चयनित शिक्षकों को, राज्य स्तर पर आयोजित प्रतियोगिता में बच्चों के समक्ष कहानी सुनाने की कला का प्रदर्शन करना होता है। इस प्रतियोगिता में प्राथमिक एवं उच्च प्राथमिक दोनों स्तरों के शिक्षकों द्वारा प्रतिभाग किया जाता है। राज्य स्तर पर आयोजित प्रतियोगिता में प्राथमिक एवं उच्च प्राथमिक विद्यालयों में शिक्षकों द्वारा बच्चों को कहानी सुनायी

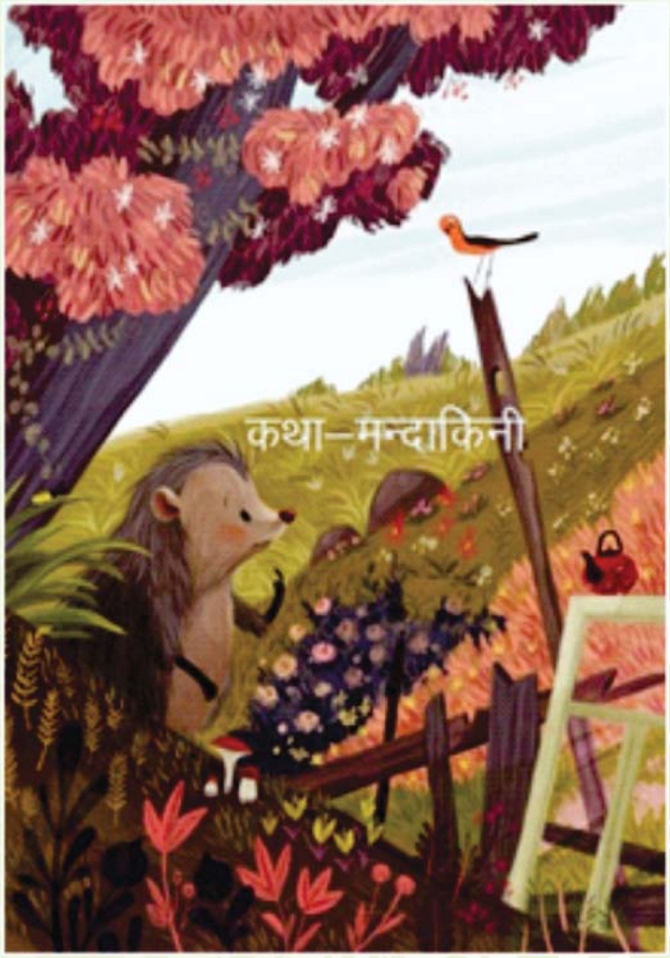

जाती है, जिसका मूल्यांकन बाल कहानीकारों तथा आकाशवाणी के विशेषज्ञों के पैनल द्वारा कहानी की विषयवस्तु, भाषा, सहायक सामग्री, सुनाने की शैली, ''शिक्षण सम्बन्धी परिणाम'' (Learning Outcomes) की सम्प्राप्ति एवं छात्र–छात्राओं की प्रतिक्रिया के आधार पर किया जाता है। कहानी में सामान्य सामाजिक/शैक्षिक विषयों यथा–विलोम शब्द, पर्यायवाची शब्द एवं अनेक शब्दों के लिए एक शब्द के प्रयोग, मुहावरे एवं लोकोक्तियों पर आधारित, जीव–जन्तुओं के प्रति संवेदनशीलता, दिव्यांगजन के प्रति संवेदनशीलता, टीम भावना से संबंधित, यात्रा–वृतांत (स्वयं के), वैज्ञानिक एवं गणितीय अवधारणाएं तथा व्याकरण (संस्कृत, हिन्दी, अंग्रेजी) को भी ध्यान में रखा जाता है।

वर्ष 2017–18 में 38 शिक्षकों, वर्ष 2018–2019 में 50 शिक्षकों एवं वर्ष 2019–20 में 40 शिक्षकों को राज्य स्तर पर पुरस्कृत किया गया है। जनपद स्तर पर प्रत्येक वर्ष लगभग 500 शिक्षकों को सम्मानित किया जाता है। वर्ष 2017–18 में आयोजित प्रतियोगिता में चयनित शिक्षकों के माध्यम से कक्षा 6, 7 व 8 की पाठ्यपुस्तक ''महान व्यक्तित्व'' पाठों पर आधारित कहानी के आडियो वर्जन भी तैयार कर पाठ्यपुस्तक में QR Code के माध्यम से लिंक किये गये हैं। शिक्षकों द्वारा सुनायी गयी कहानियों के वीडियो भी राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद, उ.प्र., लखनऊ के You Tube चैनल पर अपलोड कराये गये हैं। राज्य स्तरीय कहानी सुनाने की प्रतियोगिता में चयनित शिक्षकों की कहानियों का संकलन ''कथा–मन्दाकिनी'' के रूप में तैयार कराया गया है। वर्ष 2020–21 में कक्षा 1 से 8 की हिन्दी, अंग्रेजी, सामाजिक विषय, गणित, विज्ञान तथा पर्यावरण अध्ययन विषयों की पाठ्यपुस्तकों के पाठों पर आधारित 100 कहानियों के आडियो वर्जन तैयार कराये गये हैं। यह सामग्री कोविड–19 के काल में विभिन्न विषयगत अवधारणाओं को कहानियों के माध्यम से बच्चों को स्पष्ट करने में तथा उनके सीखने–सिखाने की प्रक्रिया में मदद कर रही है। ❑

प्रस्तुतकर्ता
टीम एस.सी.ई.आर.टी.
उ.प्र., लखनऊ

डी.एल.एड. प्रशिक्षुओं के लिये ऑनलाइन कक्षायें : एक सार्थक प्रयास

कोविड–19 के कारण फेस–टू–फेस मोड से डी.एल.एड. कक्षायें संचालित नहीं हो रही हैं। उक्त के दृष्टिगत जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थानों द्वारा ऑनलाइन माध्यम से डी.एल.एड. प्रशिक्षण की कक्षायें संचालित की जा रही है। यह कक्षायें मुख्यतः निम्न माध्यमों से चलायी जा रही हैं–

1. फेसबुक
2. व्हाट्सअप ग्रुप
3. ऑनलाइन वीडियो–ऑडियो

डी.एल.एड. प्रशिक्षुओं हेतु एस.सी.ई.आर.टी. द्वारा ऑन लाइन कक्षाओं एवं व्याख्यान का प्रसारणः–

एस.सी.ई.आर.टी. द्वारा भी फेसबुक के माध्यम से लाइव कक्षा एवं व्याख्यानों का प्रसारण दिनांक 12.05.2020 से किया जा रहा है, इसमें द्वितीय एवं चतुर्थ सेमेस्टर के पाठ्यक्रम के साथ–साथ एस.सी.ई.आर.टी. के अधिकारियों, विभिन्न विश्वविद्यालयों के विशेषज्ञों के व्याख्यान भी प्रसारित किये जा रहे हैं। यह व्याख्यान एस.सी.ई. आर.टी., उ.प्र., लखनऊ के **scertupfbpage@gmail.com** पर सोमवार से शुक्रवार प्रातः 11:00 से 11:30 बजे तथा 12:00 से 12:30 बजे तक प्रसारित किये जाते हैं। इन कक्षाओं तथा व्याख्यानों से जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थानों तथा निजी बी.टी.सी. प्रशिक्षण विद्यालयों के डी.एल.एड. प्रशिक्षु तथा डायट प्रवक्ता लाभान्वित हो रहे हैं। इसके साथ–साथ एस.सी.ई.आर.टी., उ.प्र., लखनऊ द्वारा भी डायट्स के साथ विभिन्न शैक्षणिक वीडियो साझा किये गये, जिससे उन वीडियो में प्रयुक्त की गयी शिक्षण विधियों के आधार पर प्रशिक्षु प्रभावी पाठयोजनायें तैयार कर सकें तथा नई शिक्षण विधियों को सीख सकें।

डी.एल.एड. प्रशिक्षुओं हेतु साप्ताहिक प्रोजेक्ट कार्य

डी.एल.एड. प्रशिक्षण में प्रशिक्षुओं को प्रत्येक विषय में प्रोजेक्ट कार्य करना होता है। यह प्रोजेक्ट उनके आंतरिक मूल्याकन का भाग होता है। लाकडाउन की अवधि में एस.सी. ई.आर.टी. द्वारा डी.एल.एड. प्रशिक्षुओं हेतु विषयवार प्रोजेक्ट कार्य प्रस्तावित कर भेजे गये है। डी.एल.एड. प्रशिक्षुओं हेतु साप्ताहिक सेमेस्टर वार विषयों के प्रोजेक्ट कार्य दिये गये थे।

उक्त प्रोजेक्ट कार्य प्रशिक्षुओं द्वारा घर पर उपलब्ध सामग्री से तैयार किये जाने हैं। प्रशिक्षुओं को अपने सेमेस्टर से संबंधित प्रत्येक विषय का एक प्रोजेक्ट तैयार कर whatsapp या ई–मेल द्वारा जिला शिक्षा और प्रशिक्षण संस्थान को उपलब्ध कराया गया है। इसे आंतरिक मूल्यांकन के समय सम्बन्धित डायट संकाय सदस्यों द्वारा देखा जाएगा। इस प्रकार से लाकडाउन की अवधि में प्रशिक्षुओं को शैक्षिक गतिविधियों एवं क्रियाकलापों में संलग्न रखने का प्रयास किया जा रहा है।

ऑनलाइन वेबिनार का अयोजन

जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान द्वारा विभिन्न शैक्षिक विषयों से सम्बन्धित वेबिनार्स का आयोजन किया जा रहा है। ❑

सौजन्य से–

एस.सी.ई.आर.टी.

उ.प्र., लखनऊ

बेसिक शिक्षा में "कक्षा-कक्षों का परिवर्तित स्वरूप"

दिनाँक 04 सितम्बर, 2019 बेसिक शिक्षा विभाग के लिये अत्यन्त गौरवपूर्ण एवं ऐतिहासिक क्षण था, जब मा. मुख्यमंत्री जी के करकमलों से महत्वाकांक्षी 'मिशन प्रेरणा' एवं 'मिशन प्रेरणा तकनीकी फ्रेमवर्क' का शुभारम्भ किया गया। इस अवधि में अवस्थापना सुविधाओं से सुसज्जित विद्यालय की संकल्पना को साकार रूप दिया गया है। निष्ठा ऐप (NISHTHA) के अन्तर्गत शिक्षक प्रशिक्षण, फाउण्डेशनल लर्निंग गोल्स का निर्धारण, ए.आर.पी. एवं एस.आर.जी. के रूप में एकेडेमिक लीडर्स का चयन किया गया है। स्टूडेण्ट एसेसमेण्ट टेस्ट (सैट) के माध्यम से बच्चों के लर्निंग आउटकम का आँकलन एवं इस हेतु रियल टाइम मॉनीटरिंग के लिये प्रेरणा तालिका का निर्माण, केन्द्रीयकृत पोर्टल के माध्यम से डैशबोर्ड द्वारा सूचनाओं का संकलन एवं अनुश्रवण जैसे अत्यन्त महत्वपूर्ण कार्य विभाग द्वारा संपादित किये गये हैं। साथ ही मानव सम्पदा पोर्टल के अन्तर्गत शिक्षकों का सेवा–विवरण, अवकाश आदि संबंधी कार्यों हेतु त्वरित एवं पारदर्शी ऑनलाइन व्यवस्था सुनिश्चित की गयी है, जिससे कि शिक्षक विद्यालय में शिक्षण कार्य पर अधिक से अधिक फोकस कर सकें।

शैक्षणिक गतिविधियों को नया आयाम देने के लिये विभाग द्वारा समग्र फ्रेमवर्क तैयार किया गया है। कक्षा–कक्ष के लिये अत्यन्त उपयोगी एवं गुणवत्तापूर्ण शैक्षणिक सामग्री भी उपलब्ध करायी गयी है। उल्लेखनीय है कि सम्प्रति विभाग द्वारा प्रदेश को प्रेरक प्रदेश बनाने के लिये कार्यवाही गतिमान है। कोविड महामारी के दौरान बच्चों के लिये विद्यालय लंबे समय से बंद होने के कारण उनकी दक्षताओं पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा है। कोविड–19 वैश्विक महामारी के दृष्टिगत उत्तर प्रदेश में कक्षा 1 से 8 तक शिक्षा पा रहे छात्र–छात्राओं की शैक्षणिक गतिविधियों पर प्रतिकूल प्रभाव न पड़े, इसके लिये बेसिक शिक्षा विभाग द्वारा ''मिशन प्रेरणा की ई–पाठशाला'' के अंतर्गत निम्नलिखित गतिविधियों का संचालन सुनिश्चित किया जा रहा है:–

- ई–पाठशाला के संचालन में प्रत्येक कक्षा और विषय के लिए मासिक पंचांग के अनुसार कक्षावार एवं विषयवार शैक्षणिक सामग्री सप्ताह के प्रत्येक सोमवार, बुधवार और शुक्रवार को व्हाट्सएप ग्रुप्स के माध्यम से शिक्षकों से साझा की जा रही है। राज्य स्तर से प्रेषित शैक्षणिक सामग्री के अतिरिक्त शिक्षक द्वारा भी मासिक पंचांग के अनुसार शैक्षणिक सामग्री बच्चों को उपलब्ध करायी जा रही है, जिससे बच्चों को अभ्यास एवं हल करने के लिए निरन्तर प्रोत्साहित किया जा सके।

- विभाग द्वारा निःशुल्क पाठ्यपुस्तक एवं कार्यपुस्तिकायें बच्चों को उपलब्ध करायी जा चुकी हैं। राज्य परियोजना कार्यालय द्वारा विकसित पाठ्यपुस्तकों पर आधारित वीडियो का प्रसारण दूरदर्शन के माध्यम से नियमित रूप से किया जा रहा है।
- विभाग द्वारा बच्चों के स्वयं सीखने एवं अभिभावकों को प्रेरित करने के लिए शिक्षकों के माध्यम से आवश्यक शैक्षणिक सामग्री यथा–गतिविधि आधारित टी.एल.एम. तथा पाठ से सम्बंधित शैक्षणिक वीडियो भी प्रेषित किये जा रहे हैं।
- शिक्षक और अभिभावक के बीच संवाद स्थापित करने के लिये तथा बच्चों के अभ्यास कार्य को व्हाट्सएप के माध्यम से प्राप्त कर अभिभावकों को बच्चों की प्रगति से अवगत कराते हुए फीड बैक प्राप्त किया जा रहा है।
- अध्यापकों द्वारा अभिभावकों से विद्यालय के व्हाट्सएप ग्रुप से जुड़ने, दूरदर्शन से प्रसारित शैक्षणिक कार्यक्रमों को देखने तथा दीक्षा एप डाउनलोड कर बच्चों को पढ़ने के लिये निरन्तर प्रेरित किया जा रहा है। साथ ही दीक्षा एप पर उपलब्ध 4000 आडियो–विजुअल आधारित शिक्षण सामग्री के संबंध में पाठ्य पुस्तक में दिये गये क्यू.आर. कोड को स्कैन करके अध्ययन करने हेतु भी अवगत कराया जा रहा है।

कक्षा–कक्ष का परिवर्तित स्वरूप (Classroom Transformation) :– मिशन प्रेरणा के अन्तर्गत प्रदेश के विद्यालयों एवं कक्षा–कक्षों की परिवर्तित एवं आकर्षक तस्वीर प्रदर्शित करने के लिये विभाग द्वारा समग्र खाका तैयार किया गया है, जिसके मुख्य बिन्दु निम्नवत् हैं :–

■ **प्रेरणा लक्ष्यः—** बेसिक शिक्षा विभाग, उ.प्र. द्वारा फाउण्डेशनल लिटरेसी एण्ड न्यूमरेसी पर विशेष ध्यान केन्द्रित करने पर बल दिया गया है। कक्षा 1—5 तक के छात्र—छात्राओं के लिये हिन्दी और गणित विषयों में 14—16 दक्षतायें (लर्निंग आउटकम) निर्धारित की गयी हैं एवं 80 प्रतिशत छात्र—छात्राओं द्वारा वर्ष 2022 तक ग्रेड कॉम्पिटेंसी प्राप्त किये जाने का लक्ष्य निर्धारित किया गया है। कक्षा 1—5 के बच्चों में गणित एवं भाषा में अपेक्षित अधिगम स्तर सुनिश्चित करने के लिये मिशन प्रेरणा हेतु निम्नांकित फाउण्डेशनल लर्निंग गोल्स निर्धारित किये गये हैं:—

भाषा ज्ञान सम्बन्धी लक्ष्य

- **कक्षा—1 : निर्धारित सूची में से 5 शब्द सही से पहचान लेते हैं।**
- **कक्षा—2 : अनुच्छेद को 20 शब्द प्रति मिनट के प्रवाह से पढ़ लेते हैं।**
- **कक्षा—3 : अनुच्छेद को 30 शब्द प्रति मिनट के प्रवाह से पढ़ लेते हैं।**
- **कक्षा—4 : छोटे अनुच्छेद को पढ़कर 75 प्रतिशत प्रश्नों को सही हल कर पाते हैं।**
- **कक्षा—5 : बड़े अनुच्छेद को पढ़कर 75 प्रतिशत प्रश्नों को सही हल कर पाते हैं।**

गणितीय योग्यता सम्बन्धी लक्ष्य

- **कक्षा—1 : निर्धारित सूची में से 5 संख्यायें सही से पहचान लेते हैं।**
- **कक्षा—2 : जोड़ एवं घटाना (एक अंकीय) के 75 प्रतिशत प्रश्नों को सही हल कर पाते हैं।**
- **कक्षा—3 : जोड़ एवं घटाना (हासिल के साथ) के 75 प्रतिशत प्रश्नों को सही हल कर पाते हैं।**
- **कक्षा—4 : गुणा के 75 प्रतिशत प्रश्नों को सही हल कर पाते हैं।**
- **कक्षा—5 : भाग के 75 प्रतिशत प्रश्नों को सही हल कर पाते हैं।**

■ **प्रेरणा सूची एवं प्रेरणा तालिका :—**बच्चों की रियल टाइम मॉनीटरिंग के लिये विद्यालयों में प्रेरणा सूची एवं प्रेरणा तालिकाओं को कक्षा—कक्षों में चस्पा किया गया है। फाउण्डेशनल लर्निंग गोल्स को त्रैमासिक लक्ष्य के रूप में विभाजित करते हुए प्रेरणा तालिका में अंकित किया जायेगा, जिसका प्रधानाध्यापक एवं ए.आर.पी. द्वारा सतत् अनुश्रवण एवं प्रमाणीकरण किया जायेगा।

■ **मॉडयूल्स का क्रियान्वयनः—** विशेषज्ञों द्वारा बुनियादी शिक्षा हेतु आधारशिला मॉडयूल, रिमीडियल टीचिंग हेतु ध्यानाकर्षण मॉडयूल एवं शिक्षकों के उपयोगार्थ शिक्षण संग्रह को क्लासरूम प्रैक्टिसेस में लागू किया जा रहा है।

■ **संदर्शिका :—** 'आधारशिला' मॉड्यूल के कक्षा—कक्ष में प्रभावी शिक्षण हेतु 'क्रियान्वयन संदर्शिकायें' विकसित की गयी हैं, जिसमें वर्णित समय—सारिणी, गतिविधियों आदि के माध्यम से संरचित शिक्षण (Structured Teaching Plans) सुनिश्चित किया जायेगा।

■ **सहज पुस्तिकाः—** सीखने के स्तर के आधार पर कक्षा 1 से 3 के प्रत्येक बच्चे के लिये आकर्षक कहानियों एवं कविताओं को समाहित करने वाली 'सहज' पुस्तिकायें विकसित की गयी हैं।

■ **पाठ योजनाः—** कक्षा 1 से 5 के समस्त 289 अध्यायों हेतु 20,000 से अधिक पाठ योजना विकसित की गयी हैं एवं सर्वश्रेष्ठ पाठ योजना का चयन कर प्रेरणा पोर्टल पर अपलोड भी किया गया है। साथ ही बुनियादी शिक्षा हेतु पाठ योजना पृथक से उपलब्ध करायी जा रही है।

■ **गणित किटः—** गणित विषय के लर्निंग गोल्स प्राप्त किये जाने के दृष्टिगत एन.सी.ई.आर.टी. के माध्यम से प्राथमिक विद्यालयों को मैथ्स किट्स उपलब्ध कराये जाने की कार्यवाही गतिमान है। मैथ्स किट्स के माध्यम से बच्चे में खेल—खेल में सीखने की प्रवृत्ति विकसित होगी।

■ **शिक्षक डायरीः—** प्रभावी कक्षा—शिक्षण एवं साप्ताहिक शिक्षण योजना एवं तद्नुसार शिक्षण अधिगम कार्य संचालित करने के उद्देश्य से शिक्षक डायरी विकसित करते हुए विभाग द्वारा सभी शिक्षकों को शिक्षक डायरी उपलब्ध करायी गयी है।

■ **प्रिन्टरिच मैटिरियलः—** शिक्षण अधिगम प्रक्रिया को रोचक एवं बाल—केन्द्रित बनाने में प्रिंट—रिच कक्षा—कक्ष अत्यन्त मददगार होते हैं। साथ ही शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में इनका उपयोग करके शिक्षक पूरी प्रक्रिया को बाल अधिगम केन्द्रित बना सकते हैं। तत्क्रम में विभाग द्वारा कक्षा—कक्षों के लिये आकर्षक पोस्टर्स, वार्तालाप चार्ट (Conversation Charts), टी.एल.एम. आदि शैक्षणिक सामग्री विकसित करके विद्यालयों को उपलब्ध करायी गयी है, जिससे कि बच्चे चर्चा—परिचर्चा करते हुए भाषा ज्ञान एवं मौखिक भाषा विकास का सहज ज्ञान प्राप्त कर सकें।

■ **'समृद्ध' हस्तपुस्तिका (Remedial Teaching Plan) द्वारा कक्षा संचालनः—** विद्यालय खुलने के बाद प्राथमिक कक्षाओं के बच्चों में अपेक्षित अधिगम स्तर को

प्राप्त करने के लिये राज्य परियोजना कार्यालय द्वारा विकसित विशेष मॉड्यूल ''समृद्ध'' हस्तपुस्तिका (Remedial Teaching Plan) पर आधारित रिमिडियल टीचिंग संचालित की जायेगी, जिससे कि बच्चों द्वारा प्रेरणा सूची में निर्धारित दक्षतायें प्राप्त की जा सकें।

- **पुस्तकालयः–** विद्यालयों में एन.सी.ई.आर.टी. के माध्यम से प्राप्त विभिन्न प्रकार की अध्ययन सामग्री से परिपूर्ण एक सुदृढ एवं क्रियाशील पुस्तकालय की स्थापना की जा रही है। पुस्तकालय का उपयोग बच्चों की पठन क्षमता के विकास के साथ–साथ अन्य विषयों व अभिरूचियों के विकास में भी सहायक सिद्ध होगा। पुस्तकालय के सुदृढ़ीकरण व इसके नियमित संचालन हेतु संक्षिप्त मार्गदर्शिका भी जनपदों एवं विद्यालयों को प्रेषित की गयी है।
- **रिपोर्ट कार्डः–** बच्चों की प्रगति एवं आकलन के संबंध में आयोजित की गयी सैट परीक्षा के परिणाम रिपोर्ट कार्ड के माध्यम से अभिभावकों को प्रेषित किये गये हैं।
- **दीक्षा एवं रीड एलांग ऐपः–** दीक्षा मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा लांच किया गया राष्ट्रीय ई–लर्निंग प्लेटफार्म पाठ्यक्रम आधारित पोर्टल है। शिक्षण को रूचिकर एवं प्रभावी बनाने के लिये दीक्षा ऐप के माध्यम से शिक्षकों को अतिरिक्त डिजिटल शिक्षण सामग्री उपलब्ध करायी गयी है। इस ऐप पर शिक्षकों एवं विद्यार्थियों के लिए 4000 से अधिक उच्च कोटि की विजुअल शिक्षण सामग्री उपलब्ध है। विभाग द्वारा किये गये निरन्तर प्रचार–प्रसार एवं प्रयास से लॉकडाउन एवं कोविड महामारी की अवधि में बच्चों को सीखने–सिखाने की प्रक्रिया में दीक्षा एक प्रभावी माध्यम बना है। दीक्षा के अन्तर्गत उत्तर प्रदेश के परिप्रेक्ष्य में कक्षा 1–8 तक 63 Energized Textbooks से संबंधित कन्टेंट उपलब्ध कराये गये हैं। इसमें एस.सी.ई.आर.टी. एवं विभाग द्वारा सृजित पाठ्यक्रमों के क्यू.आर. कोड एवं वीडियोज़ सम्मिलित हैं।

  इसी प्रकार शिक्षकों द्वारा अभिभावकों को रीड एलांग ऐप डाउनलोड करने हेतु अभिप्रेरित किया गया है। महामारी के प्रतिकूल समय में रीड एलांग ऐप बच्चों में अत्यन्त लोकप्रिय हुआ है।
- **व्हाट्स–ऐप क्लासेज–** राज्य स्तर से संचालित व्हाट्स–ऐप ग्रुप के माध्यम से शैक्षणिक सामग्री नियमित रूप से शिक्षकों को प्रेषित की जा रही है। शिक्षकों द्वारा विद्यालय स्तर पर 1.5 लाख से अधिक व्हाट्स–ऐप ग्रुप संचालित किये जा रहे हैं, जिसके माध्यम से अभिभावकों को नियमित शैक्षणिक सामग्री उपलब्ध करायी जा रही है ताकि अधिकतम बच्चे लाभान्वित हो सकें।
- **दूरदर्शन पर शैक्षणिक कार्यक्रमों का प्रसारणः–** शैक्षणिक गतिविधियों के सुचारू संचालन के दृष्टिगत दूरदर्शन के माध्यम से बच्चों के लिए कक्षावार 30 मिनट प्रति कक्षा, प्रतिदिन पूर्वान्ह 9:00 बजे से अपरान्ह 1:00 बजे तक (04 घण्टे) शैक्षणिक कार्यक्रम प्रसारित किये जा रहे हैं।
- **शैक्षणिक अवधि का पुनर्निर्धारणः–** विस्तृत टाइम एण्ड मोशन स्टडी के आधार पर शिक्षण दिवसों एवं घण्टों (अवधि) में बढ़ोत्तरी की गयी है। साथ ही विद्यालय स्तरीय पंजिकाओं को युक्तिसंगत बनाया गया है।
- **शिक्षक संकुलः–** विद्यालयों को शैक्षिक व सह–शैक्षिक गतिविधियों जैसे–लर्निंग आउटकम आधारित आकलन, सूचनाओं/सुझावों के आदान–प्रदान, संकुल के विद्यालयों की एकेडेमिक बैठकें, संकुल के विद्यालयों को 'आदर्श विद्यालय' के रूप में विकसित करने एवं अन्य कार्यों के लिये प्रत्येक न्याय पंचायत स्तर पर शिक्षक संकुल का गठन किया गया है।
- **सहयोगात्मक पर्यवेक्षणः–** विद्यालयों को ऑनसाइट शैक्षिक एवं एकेडेमिक सहयोग देने हेतु प्रति विकासखण्ड 05 एकेडेमिक रिसोर्स परसन तथा प्रति जनपद 03 स्टेट रिसोर्स ग्रुप की व्यवस्था की गयी है। उक्तानुसार ए.आर.पी. एवं एस.आर.जी. का एक दक्षतायुक्त योग्य समूह अध्यापकों को एकेडेमिक सहयोग देने हेतु गठित किया गया है।
- **ऑनलाइन प्रशिक्षणः–** बुनियादी एवं उपचारात्मक शिक्षा के लिये उच्च कोटि का ऑनलाइन शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया जा रहा है, जिससे कि उपलब्ध करायी गयी शैक्षणिक सामग्रियों का बेहतर उपयोग किया जा सके तथा बुनियादी शिक्षा एवं

उपचारात्मक शिक्षा को वास्तव में क्लासरूम में लागू किया जा सके।

प्रदेश के प्राथमिक एवं उच्च प्राथमिक विद्यालयों में वर्तमान में प्रचलित शिक्षण–प्रशिक्षण व्यवस्था को अधिक सुगम, सुलभ एवं मितव्ययी बनाने तथा सीधे लक्षित व्यक्ति तक पहुँच सुनिश्चित करने के उद्देश्य से सेवारत शिक्षक प्रशिक्षण को दीक्षा ऐप के माध्यम से ऑनलाइन किये जाने का निर्णय किया गया है। यह अत्यन्त हर्ष का विषय है कि लाखों शिक्षकों द्वारा ऑनलाइन प्रशिक्षण में बढ़–चढ़कर हिस्सा लिया गया है।

- **मिशन प्रेरणा यू–ट्यूब चैनलः–** शैक्षणिक कन्टेंट को शिक्षकों एवं बच्चों तक पहुँचाने के लिए मिशन प्रेरणा यू–ट्यूब चैनल भी संचालित है। इस चैनल पर नियमित शैक्षणिक वीडियोज भेजे जा रहे हैं। इस चैनल के प्रारंभ होने से अद्यतन 6.15 लाख से अधिक Unique visitors इस चैनल पर आये हैं।

- **टैबलेट एवं स्मार्ट क्लास का संचालनः–** सम्प्रति राज्य के लगभग 4000 परिषदीय विद्यालयों में स्मार्ट क्लासेज की स्थापना की जा चुकी है। समुदाय के सहयोग से स्मार्ट टी.वी., कम्प्यूटर, प्रोजेक्टर आदि का दान प्राप्त कर परिषदीय विद्यालय की कक्षाओं को स्मार्ट क्लास में रूपान्तरित करके डिजिटल शिक्षण प्रणाली को और अधिक सशक्त बनाने के लिये समुदाय, एन.जी.ओ., निजी कंपनियों से सहयोग प्राप्त किये जाने हेतु शासनादेश जारी किया गया है।

  विभाग द्वारा विद्यालयों को टैबलेट उपलब्ध कराये जाने की प्रक्रिया गतिमान है। टैबलेट उपलब्ध हो जाने के उपरान्त शैक्षणिक प्रणाली में निश्चय ही क्रांतिकारी परिवर्तन हासिल हो सकेंगे।

- **एन.सी.ई.आर.टी. पाठ्यक्रमः–** उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा वर्ष 2021–22 से चरणबद्ध रूप में एन.सी.ई.आर.टी. पाठ्यक्रम लागू करने का निर्णय लिया गया है। तत्क्रम में वर्ष 2021–22 में कक्षा–1 में एन.सी.ई.आर.टी. पाठ्यक्रम लागू किया जा रहा है।

- **पूर्व–प्राइमरी शिक्षाः–** बेसिक शिक्षा एवं आई.सी.डी.एस. के साथ समन्वय स्थापित कर पूर्व–प्राइमरी के बच्चों की उच्च प्राथमिक स्तर तक की शिक्षा के सार्वभौमिकरण हेतु कार्ययोजना बनायी गयी है। पूर्व–प्राइमरी के पाठ्यक्रम का निर्माण किया जा चुका है तथा इसके आधार पर बच्चों के लिये 'एक्टिविटी बुक' तैयार की गयी है। आँगनबाड़ी के स्टाफ एवं

शिक्षकों के प्रशिक्षण हेतु यूनिसेफ के सहयोग से प्रशिक्षण मॉड्यूल विकसित कराया गया है। सम्प्रति विकासखण्ड स्तर पर प्रशिक्षण कार्यक्रम संचालित किया जा रहा है।

- **आउट ऑफ स्कूलः–** शैक्षिक सत्र 2020–21 में आउट आफ स्कूल बच्चों के चिन्हीकरण, पंजीकरण, नामाँकन हेतु कार्यक्रम 'शारदा' (SHARDA स्कूल हर दिन आये) संचालित करते हुए 05–14 आयुवर्ग के समस्त बालक–बालिकाओं को निःशुल्क प्रारम्भिक शिक्षा उपलब्ध कराये जाने का प्राविधान करते हुए समस्त आउट ऑफ स्कूल बच्चों का चिन्हीकरण, ट्रैकिंग तथा मुख्यधारा से जोड़ने की कार्यवाही सुनिश्चित की जा रही है।

- **समावेशी शिक्षाः–** विशिष्ट आवश्यकता वाले बच्चों (दिव्यांग) की शिक्षा स्पेशल एजूकेटर्स के माध्यम से करायी जा रही है। दिव्यांगता के अनुसार बच्चों का चिन्हीकरण करते हुए उन्हें उपकरण उपलब्ध कराये जा रहे हैं। ऑनलाइन प्रणाली के माध्यम से दिव्यांग बच्चों के चिन्हीकरण, ट्रैकिंग तथा मुख्यधारा से जोड़ने हेतु 'समर्थ' कार्यक्रम गतिमान है।

इन विविध शैक्षणिक सामग्री एवं समग्र प्रयास से विद्यालय की बदलती हुई तस्वीर जनमानस के समक्ष उपलब्ध हो सकी है, किन्तु अमूर्त आकांक्षाओं को मूर्त रूप समर्पित एवं ऊर्जावान शिक्षक ही दे सकते हैं। शिक्षक ही इस परिवर्तन के ऊर्जावान एवं सच्चे संवाहक हैं। आइये हम सब मिलकर संकल्प लें कि हम उन करोड़ों बच्चों के सपनों को पूरा करने के लिये, उनकी सच्ची आवाज बनने के लिये तथा उन्हें अवसर की समता प्रदान करने के लिये अपना सर्वश्रेष्ठ योगदान देंगे और जनाकांक्षाओं पर खरे उतरेंगे। ❑

आनन्द कुमार पाण्डेय
वरिष्ठ विशेषज्ञ, गुणवत्ता
समग्र शिक्षा, उत्तर प्रदेश

बेसिक शिक्षा में खेलों को बढ़ावा

अन्तर्राष्ट्रीय पुरस्कार से सम्मानित शिक्षक

अशोक कुमार गुप्ता
सहायक अध्यापक
कम्पोजिट विद्यालय सारीपुर
विकास खण्ड–ज्ञानपुर
जिला–भदोही उ.प्र.–221304

पुरस्कार
15वीं आस्ट्रेलियन मास्टर्स गेम्स–2015
5000 मीटर वाक रेस–काँस्य पदक
10000 मीटर रोड वाक–काँस्य पदक

ग्रामीण अंचल के विद्यालय में शिक्षण कार्य के साथ–साथ खेलों में अंतरराष्ट्रीय स्तर पर कई पदक प्राप्त कर श्री अशोक कुमार गुप्ता ने भारत के साथ–साथ बेसिक शिक्षा परिषद ,उत्तर प्रदेश का नाम विश्व पटल पर गौरवान्वित किया है। बाल्यकाल से ही खेलकूद में आपकी विशेष रूचि है। स्कूल शिक्षा के समय से ही आप राज्य तथा राष्ट्रीय स्तर पर कई पदक प्राप्त कर चुके हैं। कई देशों में होने वाले अन्तर्राष्ट्रीय एथलेटिक्स प्रतियोगिता जैसे– आस्ट्रेलिया, मलेशिया में राष्ट्र का प्रतिनिधित्व करते हुए आपने देश के लिए कई पदक प्राप्त किये हैं।

आपको ऑस्ट्रेलिया के एडिलेड शहर में आयोजित 15वीं ऑस्ट्रेलियन मास्टर्स गेम्स 2015 जिसमें एशिया, यूरोप एवं ऑस्ट्रेलिया जैसे तीन महाद्वीपों के खेल कुंभ में प्रतिभाग करने का अवसर मिला। यह प्रतियोगिता 3 अक्टूबर से 10 अक्टूबर, 2015 के मध्य साउथ ऑस्ट्रेलिया एथलेटिक्स स्टेडियम, एडिलेड, ऑस्ट्रेलिया में संपन्न हुयी थी। जिसमें भारत के 158 सदस्यीय टीम ने प्रतिभाग किया था। इस टीम में उत्तर प्रदेश से एकमात्र एथलीट श्री अशोक कुमार गुप्ता का चयन किया गया था। आपने 5000 मीटर वॉक रेस और 10 किलोमीटर रोड वॉक में दो कांस्य पदक प्राप्त कर बेसिक शिक्षा परिषद, उत्तर प्रदेश के साथ–साथ राष्ट्र को विदेशी सरजमीं पर सम्मान दिलाया था।

अशोक कुमार गुप्ता ने प्राथमिक एवं उच्च प्राथमिक शिक्षा के क्रीड़ा प्रक्षेत्र में अपनी पूर्ण दक्षता, क्षमता एवं निष्ठा से जनपद के उद्दीयमान नौनिहालों को विशिष्ट पहचान दिलाई है। आप द्वारा प्रशिक्षित बालक/बालिकायें राष्ट्रीय स्तर पर विभिन्न प्रतिस्पर्धा में स्वर्ण, रजत एवं कांस्य पदक प्राप्त कर बेसिक शिक्षा परिषद, उत्तर प्रदेश का मान बढ़ाया है। क्रीडा क्षेत्र में अपना योगदान देने वाले समर्पित शिक्षक अशोक कुमार गुप्ता की तन्मयता एवं लगनशीलता से विद्यालय एवं जनपद के कई खिलाड़ियों का चयन स्पोर्ट्स हॉस्टल एवं स्पोर्ट्स कॉलेजों में भी हुआ है। इतना ही नहीं अशोक कुमार गुप्ता द्वारा विभिन्न खेलों में प्रशिक्षित विद्यालय के खिलाड़ियों का चयन स्पोर्ट्स कोटे से सेना/अर्धसैनिक बलों में भी हुआ है।

खेलों को अपना जीवन समर्पित करने वाले शिक्षक

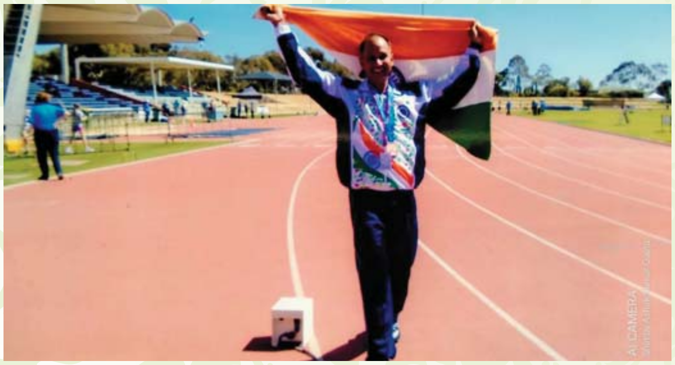

अशोक कुमार गुप्ता के औराई ब्लॉक का व्यायाम शिक्षक रहते हुए कई बालक बालिकाओं का चयन मंडल एवं राज्य स्तरीय बाल क्रीड़ा प्रतियोगिताओं में हुआ है। वर्तमान समय में कार्यरत उच्च प्राथमिक विद्यालय सारीपुर ज्ञानपुर प्राथमिक एवं उच्च प्राथमिक (बालक) का दोनों वर्गों में कबड्डी प्रतियोगिता में वर्ष 2005–06 में राज्य क्रीडा प्रतियोगिता मुरादाबाद के लिए चयनित हुआ था। स्कूल नेशनल गेम्स देहरादून में विद्यालय की छात्रा शालू सिंह ने डिस्कस थ्रो में एवं वीरेंद्र कुमार यादव ने 3 किलोमीटर दौड़ में स्वर्ण पदक अर्जित किया था।

अशोक कुमार गुप्ता के प्रयास से जहां खेलकूद से आकर्षित होकर विद्यालय न आने वाले बच्चे भी अब प्रतिदिन विद्यालय आने लगे हैं बल्कि अनुशासन एवं शिक्षा का एक अलग माहौल बन गया। बच्चों के साथ–साथ उनके अभिभावकों ने भी इस नए परिवर्तन का स्वागत किया है और विद्यालय एवं शिक्षकों को पूरा सहयोग प्रदान करने लगे हैं। इसका विद्यालय की शैक्षिक गुणवत्ता पर विशेष प्रभाव पड़ा है। शैक्षिक गुणवत्ता सुधरने से अभिभावकों का विश्वास बढ़ा है, जिसके परिणाम स्वरूप अब विद्यालय में छात्रों की संख्या 210 के ऊपर हो गई है। साउंड सिस्टम के माध्यम से प्रार्थना, पीटी तथा अन्य कार्यों का संपादन किया जाने लगा है। हमारे विद्यालय के उत्तरोत्तर विकास के कारण आम ग्रामीण जनों के साथ–साथ अभिभावक अपने बच्चों के प्रति काफी संतुष्ट नजर आते हैं। उनके दिलों में शिक्षकों के प्रति आदर सम्मान में वृद्धि हुयी है। ❑

साधारण विद्यालय को जिले के आदर्श विद्यालय में बदला

राज्य अध्यापक पुरस्कार से सम्मानित शिक्षक

डॉ. राजेश प्रताप सिंह
प्रधानाध्यापक,
प्राथमिक विद्यालय, हरिहरपुर
विकास खण्ड–वजीरगंज
जनपद–गोण्डा

राज्य अध्यापक पुरस्कार
2018

डॉ. राजेश प्रताप सिंह को वर्ष 2018 का राज्य अध्यापक पुरस्कार मा. मुख्यमंत्री उ.प्र. के कर कमलों से प्राप्त हुआ। अपनी प्रथम नियुक्ति के मात्र 12 वर्षों में राज्य अध्यापक पुरस्कार का सम्मान प्राप्त करना गौरव की बात है, लेकिन इसमें सबसे बड़ा हाथ आपकी मेहनत, कार्यकुशलता और अपने कार्य के प्रति निष्ठा का है। आप जिस विद्यालय में कार्यरत हैं वह विद्यालय भी बच्चों की न्यून होती संख्या, सुविधाओं का अभाव, बच्चों के प्रवेश लेने के बाद धीरे–धीरे स्कूल आना बन्द कर देने की समस्या से ग्रस्त था।

आपके प्रयास से आज वही विद्यालय जिले के आदर्श प्राथमिक विद्यालय में गिना जाने लगा है। आपने निरन्तर प्रयास करके समाज के सहयोग से विद्यालय में भैतिक संसाधनों में उल्लेखनीय वृद्धि की है। टूटे–फूटे विद्यालय को स्वच्छ और सुन्दर बनाने के बाद आपने ग्रामीणों से सम्पर्क कर विद्यालय में अपने बच्चों को पढ़ाने के लिये प्रेरित किया। परिणाम स्वरूप आज विद्यालय में बच्चों की काफी संख्या है साथ ही ड्राप आउट बिल्कुल समाप्त हो गया है। विद्यालय में सुविधाओं का लगातार विकास हुआ है। विद्यालय प्रांगण को आकर्षक बनाने के लिये पार्क और बागवानी का विकास कराया गया जो बच्चों व अभिभावकों के आकर्षण का केन्द्र है। विद्यालय में विद्युतीकरण के साथ ही इनवर्टर व सोलर सिस्टम की भी व्यवस्था है। विद्यालय में आपरेशन कायाकल्प के अन्तर्गत हैंडवाश, स्वच्छ शौचालय, वाटर पम्प की व्यवस्था है। आपने अपने विद्यालय में उत्कृष्ट शिक्षा के लिये बाल विज्ञान प्रयोगशाला, बाल लाइब्रेरी, शिक्षकों के ज्ञान वृद्धि हेतु शिक्षक लाइब्रेरी, ई–बुक्स और विद्यालय का अपना म्यूजिक सिस्टम स्थापित कराया है। इन सभी सुविधाओं की मदद से विद्यालय में स्मार्ट क्लास का संचालन होता है।

विद्यालय की शैक्षिक गुणवत्ता स्तर को बनाये रखने के लिये आपके द्वारा नियमित रूप से जनप्रतिनिधियों, समाज के विशिष्ट लोगों, स्थानीय कलाकारों से विद्यार्थियों का संवाद कराया जाता है। बच्चों को संस्कारयुक्त शिक्षा के साथ–साथ खेलकूद और उनके चरित्र निर्माण पर विशेष बल दिया जाता है। आज आपके विद्यालय में अभिभावक सहर्ष अपने बच्चों को प्रवेश दिलाने के लिये लालायित रहते हैं। कभी बच्चों की बाट जोहता प्राथमिक विद्यालय हरिहरपुर आज जिले का आदर्श विद्यालय है। ❑

साधनविहीन विद्यालय से सर्वश्रेष्ठ विद्यालय की यात्रा

राज्य अध्यापक पुरस्कार से सम्मानित शिक्षक

श्री पंकज पालीवाल
प्रधानाध्यापक,
प्राथमिक विद्यालय हरकूपुर,
विकास खण्ड–महेवा,
जनपद–जालौन

राज्य अध्यापक पुरस्कार
2018

श्री पंकज पालीवाल एक ऐसे कर्तव्यनिष्ठ और शिक्षा के प्रति समर्पित अध्यापक हैं, जिनके प्रयास से जालौन जनपद के सबसे पिछड़े ब्लॉक महेवा स्थित प्राथमिक विद्यालय जो तीन माह तक बिना अध्यापक के बन्द रहा हो उसे वर्ष 2016 में प्रदेश का सर्वश्रेष्ठ विद्यालय होने का गौरव प्राप्त हुआ है। जनपद मुख्यालय से 27 कि.मी. दूर यह विद्यालय सुविधाओं और अध्यापक न होने के कारण बन्द हो चुका था। ऐसे समय में आपकी नियुक्ति हरकूपुर विद्यालय में हुयी। लगभग एक वर्ष तक इस साधनविहीन विद्यालय को फिर से मुख्य धारा में लाने के लिये आपने अथक परिश्रम किया। आपने अपने विद्यालय को आदर्श विद्यालय बनाने में दोहरा प्रयास किया। एक तरफ बच्चों के शैक्षिक उन्नयन के प्रयास और दूसरी ओर विद्यालय में ढांचागत सुविधाओं के विकास की ओर ध्यान देना। दोनों दिशाओं में आपको खूब सफलता मिली। वह विद्यालय जो तीन महीने तक बिना अध्यापक के बन्द रहा हो वहाँ के बच्चे नवोदय विद्यालय में चयनित हुये और आज उच्च शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं। आपके विद्यालय में आज वह सभी सुविधायें हैं, जो आदर्श विद्यालय में होनी चाहिये। वर्ष 2011 में आपके प्रयासों की प्रसंशा मिली और तत्कालीन निदेशक, बेसिक शिक्षा श्री दिनेश चन्द्र कनौजिया जी ने आपके विद्यालय को प्रदेश का माडल विद्यालय बताया। बेसिक शिक्षा निदेशक की इस प्रसंशा से अभिभूत पालीवाल जी ने अपने विद्यालय को उत्कृष्ट विद्यालय बनाने के प्रयास जारी रखे। परिणाम स्वरूप 2016 में आपका विद्यालय को प्रदेश स्तर पर सर्वश्रेष्ठ विद्यालय चुना गया और तत्कालीन सचिव, बेसिक शिक्षा श्री अजय कुमार सिंह द्वारा विद्यालय को एक लाख बीस हजार रुपये का नकद पुरस्कार और प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया गया। पुरस्कार से प्राप्त धनराशि का उपयोग आपने विद्यालय में संसाधनों के विकास में किया है। इस धनराशि से विद्यालय में छात्रों के बैठने के लिये फर्नीचर, एल.ई.डी., टी.वी, सबमर्सिबल पम्प द्वारा नियमित जलापूर्ति और आर.ओ. सिस्टम और क्लॉस रूम में पंखे लगवाये गये हैं। नियमित विद्युत आपूर्ति हेतु सोलर सिस्टम, म्यूजिक सिस्टम, कम्प्यूटर और इण्टरनेट की सुविधा आपके विद्यालय में उपलब्ध है।

हरकूपुर प्राथमिक विद्यालय को पिछड़े विद्यालय से आदर्श और प्रदेश के मॉडल विद्यालय में बदलने के प्रयास में आपका महत्वपूर्ण योगदान रहा है। आपके सराहनीय प्रयासों को वर्ष 2018 में प्रदेश सरकार द्वारा राज्य शिक्षक पुरस्कार प्रदान कर सम्मानित किया गया। ❑

समाज के सहयोग से विद्यालय को साधन सम्पन्न बनाया

राज्य अध्यापक पुरस्कार से सम्मानित शिक्षक

श्री स्वतंत्र कुमार श्रीवास्तव
प्रधानाध्यापक,
प्राथमिक विद्यालय नगरीपार,
विकास खण्ड–मोहम्दाबाद गोहना,
जनपद–मऊ

राज्य अध्यापक पुरस्कार
2018

मऊ जनपद के मुहम्दाबाद गोहना विकासखण्ड के दक्षिण पूर्वी सीमा पर स्थित सुदूर ग्रामीण क्षेत्र के प्राथमिक विद्यालय नगरीपार के प्रधानाध्यापक स्वतंत्र कुमार श्रीवास्तव द्वारा शिक्षा क्षेत्र में किये गये कार्य अनुकरणीय हैं। लगभग 8 से 10 वर्ष में ही आपके द्वारा अपने शिक्षण कार्य से न केवल समुदाय को भी प्रभावित किया है, बल्कि बेसिक शिक्षा विभाग का भी मान बढ़ाया है। आपके द्वारा विद्यालय में सामुदायिक सहभागिता प्राप्त करने का अद्भुत उदाहरण पेश किया गया है, जो उस समय पूरे प्रदेश में अपने तरीके का एक अनूठा प्रयास था। आपके द्वारा उस छोटी सी ग्राम सभा जहां की आबादी में अधिकतर मजदूर वर्ग अनुसूचित एवं अति पिछड़ी जाति मिश्रित है, वहां के प्रत्येक परिवार से ही नहीं बल्कि आसपास के क्षेत्रों से भी एक लाख रूपये से अधिक धन इकट्ठा कर विद्यालय में भौतिक संसाधन (प्रोजेक्टर कम्प्यूटर, म्यूजिक सिस्टम, इनवर्टर डेस्क–बेंच, मल्टी वाशबेसिन) आदि के साथ–साथ बच्चों को टाई बेल्ट, आई कार्ड, थाली–गिलास की व्यवस्था की गयी। श्री श्रीवास्तव द्वारा विद्यालय के आँन्तरिक एवं बाहरी परिवेश को अत्यंत ही आकर्षक एवं प्रेरणादायी बनाया गया है। विद्यालय प्रबंध समिति का समुचित सहयोग लेकर अभिभावकों की लगातार बैठकें की गयी, जिससे विद्यालयों में छात्रों की दैनिक उपस्थिति में ही सुधार नहीं हुआ बल्कि उनके अधिगम स्तर में भी वृद्धि हुयी। छात्रों तथा अभिभावकों को सम्मानित करने की परंपरा शुरू की गयी, जो अन्य विद्यालयों के लिये प्रेरणास्पद थी। कई वर्षों तक एकल अध्यापक के रूप में रहते हुये भी आपने संसाधनों की कमी का रोना न रोते हुये, अपने अथक परिश्रम एवं मेहनत से न केवल भौतिक सुविधायें बढ़ाने में बल्कि शैक्षिक क्षेत्र में भी श्रेष्ठतम प्रदर्शन किया है। आपके द्वारा अवकाश के दिनों में भी बच्चों को प्रतियोगी परीक्षाओं जैसे नवोदय विद्यालय प्रवेश परीक्षा, विद्याज्ञान प्रवेश परीक्षा आदि की विधिवत तैयारी करायी जाती है, जिसके फलस्वरूप लगातार 3 वर्षों से विद्यालय के कई बच्चों ने विद्याज्ञान प्रथम, प्रवेश परीक्षा उत्तीर्ण की है। ब्लॉक स्तरीय, जनपद स्तरीय मिशन पहचान परीक्षा में बच्चों ने उत्कृष्ट प्रदर्शन किया है, जो आपकी उत्कृष्ट शिक्षण शैली का प्रमाण है। विद्यालय के बच्चों द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रमों, निबंध/ चित्रकला/अंत्याक्षरी प्रतियोगिता में भी उत्कृष्ट प्रदर्शन किये गये हैं। उच्चाधिकारियों द्वारा विद्यालय के निरीक्षण के दौरान बच्चों में अनुशासन एवं शैक्षिक गुणवत्ता उत्कृष्ट कोटि की पायी गयी है, जिसके लिये श्री श्रीवास्तव की भूरि–भूरि प्रशंसा भी की गयी है। आपकी शिक्षण व्यवस्था से प्रभावित होकर उस गांव के ही नहीं बल्कि 4 से 5 कि.मी. की परिधि तक के गांव के अभिभावकों द्वारा इस विद्यालय में अपने बच्चों के नामांकन कराने की होड़ लगी रहती है। अध्यापकों की कमी तथा कमरों की कमी के कारण नामांकन रोकना पड़ता है। आप अपने कार्यों की वजह से समुदाय में चर्चा का विषय बने रहते हैं। सभी ग्रामवासी विद्यालय को अपना गौरव मानते हैं। आपके कार्यों से प्रभावित होकर शासन द्वारा आपको राज्य शिक्षक पुरस्कार 2018 से सम्मानित किया गया। आपके विद्यालय को उत्कृष्ट विद्यालय के रूप में भी पुरस्कृत किया गया है। प्रधानाध्यापक के रूप में एक प्रभावशाली नेतृत्वकर्ता के रूप में आपको न्यूपा, नई दिल्ली द्वारा आयोजित नेशनल लीडरशिप कान्फ्रेन्श में आमंत्रित किया गया था। पूरे ब्लाक के शैक्षिक वातावरण के सुधार के प्रयास में आपका पूर्ण सहयोग प्राप्त हो रहा है। एक बड़ा शिक्षक समुदाय तथा प्रधानाध्यापक वर्ग आप से प्रेरणा पाकर अपने विद्यालय को आदर्श बनाने की ओर तेजी से अग्रसर हैं। ❑

विद्यालय द्वारा सोलर प्लेट से रोबोट का विकास

राज्य अध्यापक पुरस्कार से सम्मानित

सुश्री भावना शर्मा
सहायक अध्यापिका,
प्राथमिक विद्यालय कमालपुर,
विकास खण्ड–हापुड़
जनपद–हापुड़

राज्य अध्यापक पुरस्कार
2018

सुश्री भावना शर्मा जनपद–हापुड़ विकास खण्ड–हापुड़ के ग्राम कमालपुर प्राथमिक विद्यालय में सहायक अध्यापिका के पद पर कार्यरत है। आपने अपनी शैक्षणिक गतिविधियों से 104 विद्यार्थियों वाले छोटे से विद्यालय को सुर्खियों में ला दिया है। कमालपुर प्राथमिक विद्यालय राज्य स्तर पर रोबोटिक्स कक्षा वाला पहला विद्यालय बना। आपने अपने छात्रों में वैज्ञानिक, तकनीकी और रचनात्मक कौशल का विकास कर रोबोट बनाना सिखाया। ग्रामीण क्षेत्र में इस प्रकार की तकनीकी दक्षता असाधारण है। विद्यालय के छात्र–छात्रों ने आपके कुशल मार्गदर्शन में सोलर प्लेट लगाकर रोबोट बनाकर उसका प्रदर्शन किया। नन्हें–मुन्ने छात्रों द्वारा रोबोट जैसी उच्च तकनीक का प्रदर्शन अद्वितीय है।

आपके प्रयास से विद्यालय में वैज्ञानिक अभिरूचि के विकास के साथ–साथ अन्य क्षेत्रों में प्रगति परिलक्षित हो रही है। आप में वैज्ञानिक और तकनीक के साथ ही कलात्मक अभिरूचित की योग्यता है, जिसका जीता–जागता प्रमाण कमालपुर विद्यालय की दीवारें हैं, जिन पर आप द्वारा की गयी पेन्टिंग छात्रों को आकर्षित करने के साथ उन्हें ज्ञान भी बाँटती है। आप अपने विद्यालय में छात्रों को ज्ञान–विज्ञान के साथ कलात्मक ज्ञान का उपहार दे रही है। बच्चे दीवारों पर उकेरी गयी पेन्टिंग से ही कठिन बातों को आसानी से सीख लेते हैं। कमालपुर प्राथमिक विद्यालय में आधुनिक सुविधाओं का भी विकास हुआ है। ऑपरेशन कायाकल्प के अन्तर्गत विद्यालय में छात्र–छात्राओं के लिये अलग–अलग शौचालय, हैण्डवाशिंग यूनिट, जल–नल सुविधा और आधुनिक क्लास रूम बनाये गये हैं। शिक्षा और शिक्षणेत्तर गतिविधियों में भी आप बढ़चढ़ कर हिस्सा लेती हैं। आपने विद्यार्थियों एवं जनमानस में राष्ट्रीय भावना के विकास के लिये 155 फीट लम्बे राष्ट्रीय ध्वज के साथ तिरंगा यात्रा निकाली थी। आपकी इस ऐतिहासिक तिरंगा यात्रा के साथ प्रभात फेरी की खूब प्रशंसा हुयी थी। शिक्षा के क्षेत्र में किये जा रहे उत्कृष्ट कार्यों के दृष्टिगत आपको वर्ष 2018 में माननीय मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ जी द्वारा राज्य अध्यापक पुरस्कार से सम्मानित किया गया। ❑

उच्च प्राथमिक स्तर हेतु गणित प्रयोगशाला

पूर्व माध्यमिक विद्यालय कारेका, जनपद–अलीगढ़

यह सर्वविदित है कि बच्चे खेल–खेल में व स्वयं अनुभव करके अधिक तेजी से सीखते हैं, साथ ही उनके स्थायी ज्ञान में वृद्धि भी होती है। गणित विषय में यह अतिआवश्यक है कि बच्चे वस्तुओं को छुयें, अनुभव करें और स्वयं करके देखें, ऐसा करने से बच्चों के स्थायी ज्ञान में वृद्धि होती है। इन्हीं सब बातों को ध्यान में रखते हुये मेरे मन में एक विचार ने जन्म लिया कि क्यों न एक ऐसी प्रयोगशाला बनायी जाय, जिसमें गणित के प्रकरणों की समझ हेतु छोटी–छोटी प्रयोग करने वाली वस्तुयें समाहित हो।

शिक्षा विभाग से तो विज्ञान अथवा गणित किट हेतु धन आता ही है लेकिन विज्ञान व गणित किट का इंतजार क्यों? क्यों न हम स्थानीय वस्तुओं और सामग्री से एक ऐसी प्रयोगशाला का विकास करें, जिसके माध्यम से बच्चे गणित की कठिन समस्याओं को सरल ढंग से सीखकर उसे स्थायी ज्ञान में परिवर्तित कर सकें।

गणित प्रयोगशाला बनाने की तैयारी :

1. **उच्च प्राथमिक स्तर पर परिवेशीय निःशुल्क वस्तुयें संग्रह करना :**

   कार्टून के डिब्बे, गत्ते, साड़ियों, दवाइयों व गिफ्ट्स आदि के खाली डिब्बे, शादी आदि के कार्ड्स, पुरानी शर्ट के अथवा बेकार पड़े हुये बटन, धागे, ऊन, सुतली, कारपेंटर कार्य से बचे हुये घन, घनाक्ष अथवा वृत्ताकार लकड़ी के पीस, पुरानी साइकिल के पहिये से निकाली हुयी तीलियाँ, परिवेश से प्राप्त बीज जैसे–निबौरी, कंजी के बीज, लभेड़े, राजमा के दाने, चने के दाने, मक्का के दाने, बेकार पड़ी हुई सीडी, बेलनाकार वस्तुयें जैसे शटल कॉक का डिब्बा, अप्रयुक्त बोतलें आदि।

2. **बाजार से खरीदी जाने वाली वस्तुयें :**

   स्केच पेन, मार्कर, फेविकोल, फेवीक्विक, सेलो टेप, स्पार्कल टेप, डबल साइड चिपकने वाली टेप, आइसक्रीम स्टिक्स, हाई स्ट्रा पाइप, माचिस के पैकेट, रबर बैण्ड, साइकिल में हवा भरने वाला वॉल्व, भरा हुआ ज्यामितीय बॉक्स आदि।

गणित प्रयोगशाला हेतु सामग्री का निर्माण :

हम शिक्षण अधिगम सामग्री हेतु प्रिंट समृद्ध शिक्षण सामग्री, नॉन वर्किंग मॉडल्स, वर्किंग मॉडल्स आदि बना सकते हैं। कुछ प्रमुख प्रकरणों की गहरी समझ हेतु निम्नलिखित प्रकार से शिक्षण अधिगम सामग्री व मॉडल तैयार कर सकते हैं और गणित प्रयोगशाला निर्मित करके गणित विषय को रोचक व सरल बना सकते हैं।

अंक गणित के अन्तर्गत :

प्राकृति व पूर्ण संख्यायें :

- फ्लैश कार्ड्स के कई सैट्स
- +, –, x, ⁄, < आदि चिन्ह में बने कार्ड्स
- संख्या रेखा पट्टी, परिमेय सख्या रेखा पट्टी, स्लाइडिंग पट्टी
- वर्ग व मूल की समझ हेतु वर्गाकार पटल, घातांक रेल पट्टी
- **लाभ हानि**–नकली नोट व सूत्र कार्ड्स
- **ब्याज**–साधारण ब्याज, चक्रवृद्धि ब्याज, मिश्रधन के सूत्र कार्ड्स

सांख्यिकी :

- पिक्टोग्राफ व दंड आरेख कार्ड्स

बीजगणित के अन्तर्गत :

- चर–अचर बीजों के कार्ड्स
- चर–अचर फ्लैश कार्ड सैट्स
- व्यंजक कार्ड सैट्स
- सजातीय व विजातीय पदों की समझ हेतु बीजों से चिपके हुये कार्ड्स
- गुणांक क्रिएटर कार्ड रेल
- व्यंजक गुणनफल व भागफल कार्ड्स

सर्वसमिकायें :

- $(a+b)^2$, $(a-b)^2$, $a-b^2$, $(a+b+c)^2$,
- $(a+b)^3$, $(a-b)^3$ सत्यापन के ज्यामितीय वर्किंग मॉडल
- समीकरण तराजू

रेखागणित के अन्तर्गत :

- साइकिल की तानों से बनी रेखायें व रेखाओं के प्रकार, कोझा व कोण के प्रकार, त्रिभुज व त्रिभुजों के प्रकार, चर्तुभुज व चर्तुभुज के प्रकार के मॉडल्स, एकांतर कोण, संगत कोण, सम्मुख कोण के मॉडल्स।

- वृत्त व वृत्त का केन्द्र वृत्त की परिधि, वृत्त की त्रिज्या, वृत्त का त्रिज्या खंड, लघु वृत्त खंड, दीर्घ वृत्त खंड, लघु त्रिज्याखंड, लघु वृत्त खंड आदि के मॉडल्स। स्पर्श रेखा स्पर्श बिन्दु व चक्रीय चर्तुभुज सत्यापन के मॉडल्स।
- आगमन विधि से पढ़ाने हेतु, वर्ग और आयत के क्षेत्रफल मॉडल्स।
- सभी प्रकार के त्रिभुजों, चर्तुभुजों व वृत्तों के क्षेत्रफल पर समझ बनाने के वर्किंग मॉडल्स।
- पाइथागोरस प्रमेय के सत्यापन के विभिन्न वर्किंग मॉडल्स।
- त्रिभुज के अंतः केन्द्र, परिकेन्द्र व गुरूत्व केन्द्र के वर्किंग मॉडल्स।
- घन, घनाभ, शंकु, बेलन आदि के सेट निर्माण एवं उनके वक्र पृष्ठ तथा आयतनों को ज्ञात करने के वर्किंग मॉडल्स।

उक्त गणित प्रयोगशाला हेतु शिक्षण अधिगम सामग्री व मॉडल्स के अतिरिक्त और भी अनेक सम्भावनायें हो सकती हैं, जिन्हें सक्रिय सोच के साथ निर्मित किया जा सकता है।

आशा ही नहीं अपितु पूर्ण विश्वास है कि प्रदेश के गणित शिक्षक अपने विद्यालयों में गणित प्रयोगशाला बनायेंगे, जिसका लाभ हमारे बच्चों को मिलना तय है। निःसंदेह बच्चों को गणित विषय सरल व रोचक लगने लगेगा। गणित पढ़ाते समय यदि बच्चों को इन माडलों की सहायता से शिक्षा दी जायगी तो वे आसानी से आत्मसात कर कठिन लगने वाले गणित विषय को सरल समझने लगेंगे। ❑

यतीश कुमार
प्रभारी सहायक अध्यापक
पूर्व माध्यमिक विद्यालय कारेका सइपुरा,
विकास खण्ड, इगलास, जनपद–अलीगढ़

असल धुरी

सच्चाई ने अपनी गर्दन सीधी की और कभी न झुकने का बीड़ा उठाया।

धर्म ने अपनी बाँहें फैलायी और समभाव से सब कुछ खुद में ही समेटते हुए थोड़ा सा लचीलापन लिये हुए खुद को प्रस्तुत किया। झूठ थोड़ा सा इतराता हुआ चमकीली सी साज सज्जा के साथ इधर–उधर कभी इसके तो कभी उसके साथ अपने रिश्तों को कायम रखता। तीनों ही अपने–अपने महत्त्व का बड़े जोर–शोर से इस मानुष नगरी में ढिंढोरा पीट रहे थे। खुद को ही सर्वश्रेष्ठ साबित कर रहे थे। झूठ ने अपने दाँत निपोरते हुए कहा–"मेरे बिना किसी का भी दिन नहीं कटता।" और आगे बढ़ गया।

झूठ थोड़ा सा आगे निकल गया तो धर्म ने सच को हिकारत भरी नजरों से देखते हुए कहा–"केवल गर्दन अकड़ने से क्या होगा वह देखो लोग उसके साथ कितना खुश हैं।" वह बिना मायूस हुए बोला– "वह चलता तेज है चाचा! पर झूठ के पाँव नहीं होते अगर पाँव होते तो वह कब का मंजिल पर पहुँच गया होता।" धर्म ने प्यार भरी नजर उस पर डालते हुए कहा– "तभी तो मैं तुमको अपने साथ रखता हूँ। पर ये तुम्हारी अकड़ जो है वह ठीक नहीं वक्त का साथ दिया करो और धर्मराज सा बयान दिया करो, फिर देखो पूरी मानव जाति पर हमारा रंग ढंग क्या गजब करता है।"

तब तक झूठ अपनी बैसाखी ठक–ठक करता और आगे निकल गया।

सच ने धर्म से कहा– "चाचा इतिहास गवाह है जब भी मैंने अपना रंग बदला है, तुमने ही नरक का द्वार खोला है। तुम खुद तो कई रंगों में अपनी पहचान रखते हो पर मेरा रंग तो एक ही है पक्का का पक्का।"

धर्म अपनी ही दी सीख से थोड़ा शर्मिंदा हो गया और बात को बदलते हुए बोला– "तुम और मैं ही तो हूँ मानव जाति का आधार स्तम्भ हैं। हमारे बिना इस धरती का कोई अस्तित्व ही नहीं है।" "चाचा! मैं इत्तफाक नहीं रखता आप से।" सच्चाई ने अपनी अकड़ कायम रखते हुए कहा।

धर्म बोला– "अब किस बात की अकड़ प्रिय केवल तुमसे ही न चलती ये दुनिया मेरा खौफ और सहारा दोनो ही जरूरी है।"

सच ने अब अपनी पूरी गर्दन को तान कर सीधा कर लिया और तेज प्रकाश पुंज सा चमकते हुए बोला– "चाचा आप भैया कर्म को कैसे भूल सकते हैं असल है वह इस दुनिया का। सबको संचालित करने की वही है असल धुरी।"

धर्म ने अपने लचीले पन का पूरा सहारा लिया और सत्य का साथ दिया

तभी धम्म से गिरने की आवाज आई झूठ अपनी मंजिल से पहले ही गिर चुका था। ❑

ज्योत्सना सिंह
गोमती नगर, लखनऊ

पैरेन्ट टीचर मीटिंग से जागरूक हुये अभिभावक

प्राथमिक विद्यालय कटरी पीपरखेड़ा, जनपद–उन्नाव

मैंने अपने विद्यालय में यह अनुभव किया कि अभिभावकों का जुड़ाव विद्यालय से नहीं है, वे विद्यालय को अपना नहीं समझते हैं। मैंने उनको विद्यालय के कार्यक्रमों में बुलाने के साथ–साथ पैरेंट टीचर मीटिंग में बुलाना शुरू किया। प्रतिदिन अभिभावकों से मिलना भी शुरू किया और उनके द्वारा आयोजित कार्यक्रमों में प्रतिभाग करना शुरू किया। इतना सब करने के बाद भी हमें वाँछित सफलता नहीं मिल पा रही थी तभी हमें एक तरकीब सूझी कि क्यूँ न हम कुछ ऐसा करें, जिससे प्रतिदिन कुछ अभिभावक हमारे विद्यालय में आयें विद्यालय में होने वाली गतिविधियों को देखें और विद्यालय से वापस जाकर समाज में विद्यालय के कार्यों का प्रचार–प्रसार करें।

इसके लिये हमने सबसे पहले **''दैनिक अभिभावक सहभागिता''** नाम से एक रजिस्टर बनाया जिसमें हर कार्य दिवस के लिये एक पेज निर्धारित किया तथा प्रत्येक कक्षा के एक बच्चे के अभिभावक को प्रार्थना स्थल पर आमंत्रित करना शुरू किया। इस प्रकार प्रतिदिन पांच अभिभावक विद्यालय से जुड़ने लगे। पर यह इतना आसान नहीं था। हमने सभी अभिभावकों के मोबाइल नम्बर लिये। अब जिन अभिभावकों को बुलाना होता था। उनको एक दिन पहले फोन किया जाता और उनके बच्चों की कॉपी पर भी लिखा दिया जाता। रसोइयों आंगनवाड़ी सहायिका तथा एस.एम.सी. सदस्यों द्वारा सूचना उन तक पहुंचाई जाती और सुबह फिर उन्हें एक बार फोन किया जाता था।

प्रार्थना सभा में जिन बच्चों के माता–पिता उपस्थित होते उन्हीं बच्चों के द्वारा उस दिन की प्रार्थना, राष्ट्रगान, पी.

टी., दोहा वाचन, योग, समाचार वाचन, सामान्य ज्ञान प्रश्नोत्तरी प्रस्तुत की जाती थी, जिससे माता–पिता अपने बच्चे का प्रदर्शन देखकर खुश होते थे। अब यह आदत बन चुकी है। सभी अभिभावक विद्यालय से जुड़ाव महसूस करते हैं और नये–नये विचार विद्यालय के विकास के लिये सोचते हैं।

उपस्थित माता–पिता ही बच्चों की स्वच्छता की जांच करते हैं। पिछले दिन की उनकी अनुपस्थिति का कारण जानते हैं। उपस्थित माता–पिता या उनके कोई रिश्तेदार जो किसी भी विषय में दक्ष होते हैं, उसका प्रदर्शन वो बच्चों के सामने करते हैं।

प्राथमिक विद्यालय कटरी पीपरखेड़ा का व्हाट्स ऐप ग्रुप बहुत पहले ही बन गया था, जिसका फायदा ऑनलाइन क्लासेज चलाने में भी मिला। अभिभावकों के सहयोग से विद्यालय में सबमर्सिबल, पम्प आर.ओ. और फर्नीचर की व्यवस्था की गयी है। अभिभावकों के सहयोग से ही विद्यालय के दो बच्चे मो. रोशन और सानिया मिर्जा वर्ष 2019 के राज्य स्तर के बालक–बालिका, योग–प्रतियोगिता के विजेता रहे हैं तथा वर्ष 2016 से ब्लॉक स्तरीय, जनपद स्तरीय कई खेलों के विजेता बने हुये हैं। लगातार दो सालों से पुलिस लाइन परेड उन्नाव में हमारा विद्यालय विजेता रहा है।

एक बच्चे के पिता अब विद्यालय के हारमोनियम शिक्षक भी हैं, कक्षा–3 के दो बच्चे उनसे हारमोनियम सीख चुके हैं। ❑

डॉ रचना सिंह
प्रधानाध्यापिका,
प्रा.वि. कटरी पीपरखेड़ा,
ब्लॉक–सिकन्दरपुर कर्ण,
जनपद–उन्नाव

हौसलों की उड़ान : अभिभावकों को सिखाया अक्षर ज्ञान

प्राथमिक विद्यालय रोजा जलालपुर, जनपद–गौतमबुद्धनगर

मैं प्राथमिक विद्यालय रोजा जलालपुर गौतमबुद्धनगर में कार्यरत हूँ। मेरे विद्यालय में पढ़ने वाले छात्र–छात्राओं के अधिकाँश अभिभावक मजदूरी करते थे। समय न मिल पाने के कारण वे अपने बच्चों की शिक्षा के प्रति गम्भीर नहीं रहते थे। परिणामस्वरूप विद्यालय में ड्रापआउट बहुत अधिक था।

शिक्षक मोमबत्ती जैसा होता है, जो चारों ओर प्रकाश फैलाता है। शहर निवासी दीप न सिर्फ बच्चों को बल्कि उनकी मम्मियों को भी साक्षर बना रही है-

अंगूठा नहीं सशक्त हस्ताक्षर

कमजोर आय वर्ग वाले बच्चों की माताएं अब पीटीएम में हस्ताक्षर करती हैं

ए

महिलाओं को लिखना सिखाती दीप

प्रोत्साहित करने के लिए देती हैं इनाम

मिला सम्मान

मैंने अपने विद्यालय में छात्र–छात्राओं की शिक्षा के प्रति अभिभावकों को जागरूक करने के लिये पैरेंट–टीचर मीटिंग की शुरूआत की। मीटिंग में पुरूषों की अपेक्षा महिलाओं की संख्या अधिक रहती थी। मैंने इसका कारण जानना चाहा तो महिलाओं ने बताया कि अपने रोजगार, नौकरी और व्यवसाय के कारण हमारे घरवाले मीटिंग में नहीं आ पाते हैं। मीटिंग में सभी अभिभावकों को अपने बच्चे के नाम के सम्मुख रजिस्टर में अपना नाम लिखकर हस्ताक्षर करना होता था। मैंने देखा कि कुछ ही महिलायें अपना नाम लिखकर हस्ताक्षर कर पाती थीं शेष असमर्थता व्यक्त करती और कहती कि मैं तो पढ़ी लिखी नहीं हूँ अगूँठा लगाती हूँ। मुझे यह सुनकर शर्मिन्दगी महसूस होती कि आधुनिक होते देश में महिला शिक्षा की यह स्थिति है। मैनें ऐसी 25 महिलाओं को एकत्र किया और उनसे पूछा कि क्या आप सब पढ़ना चाहती हैं। अधिकांश का जवाब हां में था। उनसे मैंने कहा कि आपको पढ़ाने की जिम्मेदारी मैं लेती हूँ, लेकिन आपको नियमित रूप से स्कूल समय के बाद पढ़ने आना होगा। पढ़ने के प्रति महिलाओं के हौसले को देखते हुये मैंने उन्हें स्कूल की छुट्टी के बाद एक घंटा नियमित रूप से पढ़ाना शुरू किया। उनके हौसलों को सफलता मिलने लगी। मैंने उसे ग्रुप का नाम भी ''हौसलों की उड़ान'' रखा। तीन महीने की नियमित कक्षा के बाद हमारे इस ग्रुप की महिलायें लिखना पढ़ना सीख गयीं हैं। अब वे मीटिंग में अगूँठा न दिखाकर अपना नाम और हस्ताक्षर करती हैं।

अगर मन में समाज के लिये कुछ करने का इरादा हो तो हर मुश्किल आसान हो जाती है। मेरे इस कार्य के लिये अभिभावकों से तो सम्मान मिलता ही है। मेरे इस योगदान के लिये वर्ष 2019 में इनोवेटिव टीचर अवार्ड से भी मुझे सम्मानित किया गया है। ❑

दीप शिखा शर्मा
सहायक अध्यापिका,
रोजा जलालपुर, जनपद–गौतमबुद्धनगर

डिजिटल लर्निंग : एक प्रयास

संविलित विद्यालय चौमुहाँ, जनपद–मथुरा

परिषदीय विद्यालयों में शिक्षा के स्तर को उच्च आयाम देने की पहल लगातार जारी है। इसी उद्देश्य की पूर्ति हेतु शिक्षक अपना पूर्ण योगदान दे रहे हैं। इसी दिशा में परिषदीय संविलित विद्यालय चौमुहाँ विकास खण्ड–चौमुहाँ जनपद–मथुरा के सहायक अध्यापक श्री शिवकुमार पचौरी जी द्वारा अहम भूमिका निभायी गयी है। श्री शिवकुमार पचौरी जी शिक्षण क्षेत्र में नवीन प्रयोगों के लिये सदैव तत्पर रहते हैं। पूर्व में उन्होंने अपने अथक प्रयासों द्वारा विद्यालय का कायाकल्प किया तथा लैपटॉप प्रोजेक्टर से किताबों के पाठ पढ़ाकर–जहां एक ओर बच्चों की पढ़ाई में रूचि जाग्रत की वहीं दूसरी ओर तकनीक से शिक्षण को बढ़ावा भी दिया। जिसके लिये इन्हें समय–समय पर पुरस्कृत भी किया गया है। मिशन शिक्षण संवाद द्वारा भी शिवकुमार जी को सम्मानित किया गया है।

श्री शिवकुमार पचौरी जी ने अहम किरदार तो तब निभाया है जब कोरोना वायरस से बचाव के लिए लॉकडाउन हुआ और स्कूलों पर ताले लग गये। श्री शिवकुमार पचौरी ने परिषदीय विद्यालय के बच्चों की ऑनलाइन पढ़ाई व्हाटसऐप द्वारा जारी रखी। इसमें उन्हें कई परेशानियों का सामना करना पड़ा क्योंकि परिषदीय विद्यालयों के बच्चे इससे अंजान थे। कई अभिभावकों के पास एंड्रोएड फोन भी नहीं था। उन्हें कॉल द्वारा समझाया गया। इनके इस प्रयास को कई समाचार पत्रों ने सराहा। ऑनलाइन शिक्षा को बढ़ावा देते हुये श्री शिवकुमार पचौरी ने गूगल डिवाइस पर तैयार फार्मेट द्वारा इस वर्ष ऑनलाइन दाखिला भी किया है। इसी दिशा में वह निरन्तर प्रयासरत है तथा ऑनलाइन शिक्षा को परिषदीय विद्यालय के बच्चों तक पहुंचाने के लिये हर सम्भव कोशिश उनके द्वारा की जा रही है, जो कि अत्यन्त सराहनीय है। उन्होंने ये सिद्ध कर दिया है कि स्कूल भवन बन्द हुए हैं शिक्षा नहीं।

करोना महामारी के चलते विद्यालय में शिक्षण कार्य बन्द हो गया था। ग्रामीण क्षेत्रों में एन्ड्रायड फोन, टेलीविजन का अभाव ऐसे में करोना काल में ग्रामीण क्षेत्रों के बच्चों को शिक्षित करना आसान नहीं था, लेकिन इस कठिन परिस्थिति में अपने दृढ़ इरादों से कुछ अध्यापकों ने असम्भव से लगने वाले कार्य को आसान बनाकर शिक्षा की लौ को जलाये रखा है। ऐसे ही आदर्श अध्यापक हैं श्री शिवकुमार पचौरी जी। ❑

सौजन्य से–
खण्ड शिक्षा अधिकारी
संविलित विद्यालय चौमुहाँ, जनपद–मथुरा

कोरोना के साथ भी के बाद भी

शिक्षा को एक छलांग दे जाएगा कोरोना वायरस

ऑनलाइन शिक्षा का नया अध्याय लिख रहा लॉकडाउन

कोरोना की दहशत से बही डिजिटल लर्निंग की बयार

बुनियादी शिक्षा में अब ऑनलाइन दाखिला भी

लखनऊ में शिक्षक शिवकुमार पचौरी सम्मानित

चौमुहां | हिन्दुस्तान संवाद

शिक्षा निदेशक बेसिक के निर्देशन एवं मार्गदर्शन में भागीदारी भवन लखनऊ के प्रेक्षागृह में राज्य स्तरीय मिशन शिक्षण संवाद कार्यशाला शनिवार को हुई। इसमें प्रदेश के सैकड़ों शिक्षक-शिक्षिकाओं ने अपने अनुभवों व शिक्षा के क्षेत्र में किए गए कार्यों को साझा किया। अच्छा काम करने वालों को सम्मानित किया गया। शनिवार को हुए इस कार्यक्रम में 30 नवाचारी शिक्षक प्रतिभागियों ने प्रस्तुतिकरण किया। जनपद से उक्त कार्यशाला में प्राथमिक विद्यालय चौमुंहा द्वितीय के सहायक अध्यापक शिव कुमार पचौरी ने प्रतिभाग किया। उन्हें प्रशस्ति पत्र दे सम्मानित किया।

मिशन शिक्षण संवाद में शिक्षा निदेशक बेसिक सर्वेन्द्र विक्रम बहादुर सिंह प्राथमिक विद्यालय द्वितीय चौमुहां के सहायक अध्यापक शिवकुमार को सम्मानित करते हुए।

स्कूल मैगजीन : उड़ान-एक नई पहल

उच्च प्राथमिक विद्यालय कमोलिया खास, जनपद-बहराइच

मैंने उच्च प्राथमिक विद्यालय कमोलिया खास विकास खण्ड–चितौरा, जनपद–बहराइच में एक अलग तरह के नवाचार का प्रयोग किया गया। इस नवाचार के अन्तर्गत विद्यालय के बच्चों और शिक्षकों के सहयोग से हैंडमेड स्कूल मैगजीन का निर्माण किया गया है, जिसे 'उड़ान एक नई पहल' का नाम दिया गया है। इस मैगजीन की मुख्य विशेषता यह है कि यह पूरी तरह से हैंडमेड है। इसे सामान्य पेज पर न बनाकर चार्ट पेपर को मोड़ कर 'बिग बुक्स' की तर्ज पर बनाया गया है। इस मैगजीन में ब्लॉक, जिला मंडलों व राज्य स्तर पर बच्चों की उपलब्धियों को संक्षेप में लिखकर उसके साथ फोटो चस्पा की गयी है। विद्यालय में होने वाली विभिन्न गतिविधियों, नवाचारों, समारोहों इत्यादि का भी संकलन किया गया है। बच्चों के साथ–साथ शिक्षकों और विद्यालय को प्राप्त सम्मान व पुरस्कारों का भी संग्रह है। इस नवाचार को करने से विभिन्न प्रकार के लाभ हुये हैं

जैसे–बच्चों में कलात्मक, रचनात्मक अभिरूचि का विकास और उन्हें समूह व सहयोग के महत्व का ज्ञान हुआ है।

शिक्षक अभिभावक बैठक में जब इन पत्रिकाओं को अभिभावकों को दिखाया जाता है तो वे अपने बच्चों की प्रदर्शन क्षमता, गुणों और योग्यताओं को बेहतर तरीके से समझ पाते हैं तथा विद्यालय के प्रति अभिभावकों का सकारात्मक व रूचिपूर्ण रवैया उत्पन्न होता है। विद्यालय के बच्चों एवं शिक्षकों के प्रयासों का संकलन एक मंच पर एक दृष्टि में अभिभावकों व विद्यालय भ्रमण करने वाले अधिकारियों के समक्ष प्रस्तुत करने में सरलता होती है।

संक्षेप में कहें तो ''उड़ान'' सिर्फ विद्यालय पत्रिका का शीर्षक नहीं बल्कि हमारे बच्चों के सपनों और आशाओं की उड़ान की अनुभूति है। जिसका सिर्फ अनुभव ही किया जा सकता है। इस नवाचार को राष्ट्रीय स्तर पर माननीय मानव संसाधन विकास मंत्री श्री रमेश पोखरियाल निशंक जी एवं अरिविन्दो सोसाइटी द्वारा सम्मानित किया गया है। ❑

आंचल श्रीवास्तव
उ.प्रा.वि. कमोलिया खास,
ब्लॉक–चितौरा, जनपद–बहराइच

ऑनलाइन शिक्षा में प्रोजेक्टर का प्रयोग

प्राथमिक विद्यालय बिनौली नं.-१, जनपद-बागपत

लॉकडाउन जैसी विषम परिस्थिति में मैंने अपने विद्यालय के बच्चों को ऑनलाइन शिक्षा देने की ठानी और बच्चों को शिक्षा देने के लिये कई सार्थक प्रयास किये। मैंने बच्चों को ऑनलाइन पढ़ाने के लिये प्रोजेक्टर का प्रयोग सफलतापूर्वक किया। दृश्य श्रव्य सामग्री का उपयोग करते हुये बच्चों को जोड़ने का भरपूर प्रयास किया, जिससे अधिक से अधिक बच्चों को शिक्षा का लाभ मिल सके।

प्रोजेक्टर व आकर्षक मॉडल के माध्यम से विषय वस्तु को सरल व रोचक बनाकर बच्चों की पढ़ाई के प्रति रूचि बढ़ाने में मैंने महत्वपूर्ण कार्य किया है। हिन्दी विषय को सरल व रोचक बनाने के लिये प्रोजेक्टर को माध्यम बनाकर दो अक्षरों को जोड़कर शब्द बनाना सिखाया/साथ ही सुन्दर TLM बनाया, जिससे बच्चों ने तेजी से सीखा। मेरे द्वारा कई अन्य आकर्षक पाठ्य सामग्री व पढ़ाई को रूचिकर बनाने के लिये वीडियो बनाकर पढ़ाई कराई गयी। इस प्रयास से बच्चों में सीखने के कौशल का विकास हुआ और बच्चों में कलात्मकता व रचनात्मकता का बोध हुआ।

बच्चों को पर्यायवाची शब्दों का ज्ञान कराने के लिये घर में पड़े शादी के कार्डों से एक किताब तैयार की गयी। शादी के कार्डों से अनेक चित्र लेकर उनके अलग-अलग पर्यायवाची शब्दों को लिखा गया क्योंकि बच्चे चित्र को देखकर बहुत ही आसानी से सीख जाते हैं। इस प्रकार चित्रों देखकर बच्चों ने बहुत ही अच्छे ढंग से सीखा और याद भी किया। लड़की, पृथ्वी, फूल, गणेश, पेड़, आम, चन्द्रमा के पर्यायवाची शब्दों को चित्रों के माध्यम से समझा और याद किया।

लर्निंग आउटकम-बच्चों ने प्रोजेक्टर के माध्यम से दो अक्षरों का जोड़ वाले शब्दों को बोलना और उनको लिखना भी सीखा। पर्यायवाची की आकर्षक पुस्तक से प्रभावित होकर बच्चों ने यह पुस्तक घर पर स्वयं भी बनायी, जिससे बच्चों में स्थायी ज्ञान का विकास हुआ। ❑

कविता सिंह
प्रधानाध्यापिका,
प्राथमिक विद्यालय बिनौली नं.-1
विकास खण्ड-बिनौली, जनपद-बागपत

'मन'

निर्झर सा मन करता कलकल
कभी उदधि सा थम अविचल,
बहता रहता सरिता बनकर
सतत प्रवाहित है प्रतिपल।

पाप पुण्य के फेर में पड़कर
आंचल कलुषित कर डाला,
जोड़ रहे थे मनका मनका
मन का टूट गया माला।

मन अनुरागी संतापी सा
बहके स्थावर जंगम,
मिट न सका है घोर अंधेरा
बढ़ता जाए अंतर्तम।

बोधिवृक्ष सा मिले सहारा
हो संतृप्त हमारा मन,
शिव कैलाशी होकर के भी
जैसे रमते हैं कन कन।

जग में गांधी गौतम सा वो
मन को जीते, जो जीते,
हुआ सफल जीवन बस उसका
मोंह बांसुरिया न रीते।।

शिव प्रकाश
सहायक अध्यापक
विकास खण्ड-डीह, जनपद-रायबरेली

बुजुर्गों से सीखें

प्राथमिक विद्यालय बरदौलिया, जनपद–बलरामपुर

हमारे समाज में नैतिक मूल्यों में लगातार गिरावट हो रही है। इसका एक महत्वपूर्ण कारण है हम अपनी आने वाली पीढ़ी को संस्कार और नैतिक मूल्यों की मर्यादा में रखने का ज्ञान नहीं दे पा रहे हैं। हमारे प्रदेश के बेसिक शिक्षा विभाग के विद्यालयों में इस दिशा में एक सफल प्रयास की आवश्यकता है। इसी दिशा में सोचते हुये मैंने एक नवाचार का विकास किया। इस नवाचार के अन्तर्गत छात्र–छात्राओं को अपने घर के बुजुर्गों दादा–दादी, मम्मी–पापा के साथ नियमित रूप से कुछ समय बिताने के लिये प्रेरित किया गया। साथ–साथ उन्हें यह भी कहा गया कि प्रतिदिन उनसे कुछ नया सीखें और उसे अपनी डायरी में लिखें। सप्ताह में एक दिन बाल–सभा आयोजित की जाती थी, जिसमें बच्चे सीखी हुयी चीजों का प्रदर्शन भी करते थे। इससे बच्चों में अपने बुजुर्गों के प्रति सम्मान, बढ़ा। वे रोज उनके पास बैठते और कुछ सीखते हैं।

इस नवाचार से एक चौकाने वाली चीज सामने आई। हमारी संस्कृतियां जो लुप्त होती जा रही थी, जैसे लोक कथाएं, लोकोक्ति, लोकगीत, हस्तशिल्प आदि वो सामने आने लगी और उनका संकलन होने लगा। अभिभावकों में आत्मविश्वास बढ़ा और बच्चे उनकी आवश्यकता समझ कर उनको सम्मान देने लगे। बेहतर प्रदर्शन वाले बच्चों और अभिभावकों को बैठक में सम्मानित भी किया गया।

इस तरह हमारी संस्कृति के संरक्षण के साथ–साथ बच्चों में बड़ों के प्रति सम्मान भी बढ़ा है। बच्चे अपने अभिभावकों के साथ समय बिताने लगे और उनका आदर करने लगे हैं।

इस नवाचार के लिये मुझे दिल्ली में मानव संसाधन विकास मंत्री द्वारा शिक्षा में शून्य निवेश नवाचार के लिये सम्मानित किया गया है। ❑

सचेन्द्र नारायण तिवारी
सहायक अध्यापक,
प्राथमिक विद्यालय बरदौलिया, जनपद–बलरामपुर

'शक्ति टीम' बनी विद्यालय की शक्ति

प्राथमिक विद्यालय नवादा, जनपद-हापुड़

प्राथमिक विद्यालय नवादा जो बुलंदशहर रोड के हाइवे पर स्थित है। गाँव से लगभग 03 किलोमीटर दूर विद्यालय तक आने हेतु बच्चों को पहले रेलवे क्रोसिंग पार करनी होती है फिर हाइवे पार कर जब वो विद्यालय आते थे तो वहां 33 हजार वोल्ट के खम्बों का खतरा उनके ऊपर मंडराता रहता था। यद्यपि विद्यालय के शिक्षक छुट्टी के समय सड़क पार कराने की अपनी नैतिक जिम्मेदारी पूरी करते थे फिर भी एकल शिक्षक होने के कारण डर हमेशा बना रहता था। ऐसे में हमें अभिभावकों के सहारे की आवश्यकता थी जिसके लिए कुछ नया करने का विचार मन में आया।

अभिभावक बेसिक शिक्षा में विद्यालय और छात्रों के मध्य की एक महत्वपूर्ण कड़ी होते हैं यदि वे जागरूक हों तभी एक शिक्षक की मेहनत बच्चों में परिलक्षित होती है।

कहा गया है कि यदि बेटा पढ़ता है तो केवल एक परिवार साक्षर होता है मगर यदि एक बेटी पढ़ती है तो दो परिवारों के साथ–साथ एक पूरा कुल पढ़ता है। इसी बात को ध्यान में रखकर परिवार में पिता की भूमिका से बढ़कर माता की भूमिका को महत्व देते हुए मैंने एक 'महिला शक्ति टीम' का गठन किया। जिसकी शुरूआत जुलाई 2019 में की गई। 15 सितंबर, 2019 को शिक्षक दिवस के अवसर पर एक माँ को बच्चे की सबसे पहली गुरू होने का सम्मान देते हुए बच्चों द्वारा उनके पैर छूने की परंपरा प्रारम्भ कराई गयी। शिक्षक

दिवस के अवसर शक्ति टीम को एक शक्ति बैंड पहनाकर महत्वपूर्ण जिम्मेदारी सौंपी गयी कि वे बच्चों को विद्यालय आने में सहयोग करें। शक्ति टीम की सदस्य सभी बहनों द्वारा बच्चों को रेलवे क्रासिंग पार कराने व बिजली की लाइन से बच्चों का बचाव करने में नियमित सहयोग मिलने लगा है। कोरोना के समय बच्चों के ऑनलाइन शिक्षण में उनसे बराबर सहयोग मिल रहा है। जब भी आवश्कता होती है शक्ति टीम की सदस्य बढ़ चढ़कर सहयोग करती हैं। उन्हें बच्चियों की सुरक्षा, पोषण, और स्वच्छता के बारे में अच्छी जानकारी दी गयी है जिसका उपयोग वे अपने घरों पर कर रही हैं।

इस नवाचार के फलस्वरूप महिला शक्ति टीम बच्चों को रेलवे क्रासिंग और हाइवे पार कराते हुए विद्यालय भेजती हैं। साथ ही गाँव और विद्यालय में होने वाले बैठकों सहित सांस्कृतिक कार्यक्रमों में भी बच्चों को तैयार करने का कार्य सहर्ष करती हैं। अनेक कार्यों में पहले से अधिक महिलाएं शामिल होती हैं।

बेसिक शिक्षा में मेरे द्वारा किया गया यह नवाचार अपने आप में एक अनोखी पहल है जो परिषदीय विद्यालयों के प्रति अभिभावक के दृष्टिकोण को बदलने में सहायक हुआ है। ❑

डॉ. रेणु देवी
सहायक अध्यापिका
प्राथमिक विद्यालय नवादा, ब्लॉक व जिला–हापुड़

कर्तव्यबोध : नई तकनीक के साथ शिक्षण

प्राथमिक विद्यालय रसूलाबाद, जनपद–कौशाम्बी

बचपन से ही शिक्षण मेरा शौक था। बच्चों के साथ मिलकर प्रतिदिन मैं कुछ नया सीखती हूँ। ग्रामीण जीवन का मुझे कोई अनुभव न था। अतः बच्चों के संघर्ष मुझे स्वाभाविक कभी नहीं लगे। सर्दी–गर्मी की कठोरता में जहाँ हम अपने लिए भौतिक सुविधाओं को जुटाने में लगे होते हैं वहीं ये मासूम उनसे इस प्रकार गले मिलते हैं मानो वे प्रतिकूल परिस्थितियाँ इनके मित्र हों। सर्वप्रथम इन्हें सर्दी में नंगे पैरों आते देख मैंने 2015 में ही जूते तथा जुराब पहनाने का जो प्रयत्न किया था। सरकारी सहयोग से आज सभी बच्चों के पैर सुरक्षित हैं।

मुझे अपने बच्चों को प्राइवेट स्कूल के बच्चों से किसी भी क्षेत्र में कम नहीं रखना था। अतः मैंने यह निर्णय लिया कि कम से कम मैं अपनी कक्षा का पूर्ण दायित्व तो ले ही सकती हूँ। अतः उन्हें मेज, कुर्सी, कॉपी, पेंसिल, रंग आदि आवश्यक चीजें उपलब्ध कराने के साथ–साथ गुणवत्तापूर्ण शिक्षा देने का प्रयास कर रही हूँ।

तकनीक के क्षेत्र में भी मेरे बच्चे अच्छे से अच्छा कर सकें अतः उन्हें कम्प्यूटर द्वारा शिक्षा प्रदान करती हूँ और मैं स्वयं को भाग्यशाली समझती हूँ कि बच्चों के साथ नित् नयी–नयी प्रक्रियायें सीख पाती हूँ।

पाठ्यवस्तु को सरलतम् ढंग से प्रस्तुत करने के लिए स्वयं के प्रयास के साथ–साथ मैं दीक्षा एप, क्यू–आर कोड, यू–ट्यूब तथा मिशन शिक्षण संवाद की ओर से प्राप्त करायी जा रही पाठ्य सामग्री से भी बच्चों को सीखने के लिए प्रेरित करती हूँ। गतिविधियों, नाटकों, चित्रकारी तथा खेल के माध्यम से भी सीखने व सिखाने का प्रयास करती हूँ। समय–समय पर प्रोत्साहन व पुरस्कार के द्वारा भी उन्हें ऊर्जावान बनाने का प्रयास किया जाता है।

बच्चों के सौजन्य से ही विद्यालय को विभाग द्वारा अब तक 18 बार पुरस्कृत किया गया है। दो बार राज्य स्तर पर भी आई.सी.टी. तथा कहानी वाचन के लिए मुझे लखनऊ में सम्मानित किया गया है।

कोविड 19 के कारण लॉक डाउन के दौरान जब बच्चों को पढ़ा पाना संभव न था तब 5 बच्चों के मोबाइल नम्बर से

शुभारम्भ करके कई चुनौतियों के बाद यह ग्रुप 42 बच्चों तक पहुँचा है। जहाँ बच्चे भली–भाँति सीख रहे हैं।

स्वयं कम्प्यूटर द्वारा गृहकार्य तैयार करके भेजना मेरी दिनचर्या बन गया है। गृहकार्य करने में बच्चों की मदद करते हुए उनकी छोटी सी छोटी आशंकाओं को मिटाने का पूर्ण प्रयास करती हूँ। लॉक डाउन के दौरान अपनी कक्षा की भविष्य की योजनाएँ भी तैयार कीं हैं। सभी ऑनलाइन प्रशिक्षण को पूरी लगन के साथ देखती हूँ। जिससे कि मैं उन्हें अपनी कक्षा में प्रयोग कर सकूँ। लॉक डाउन के दौरान ही समय का सदुपयोग करते हुए अपनी कक्षा में उपयोगी कई टी.एल.एम. भी तैयार किये हैं। ऑनलाइन प्रशिक्षण की सभी प्रश्नोत्तरी में भाग लेती हूँ। मेरे विद्यालय के बच्चों ने भी मिशन शिक्षण संवाद द्वारा आयोजित ऑनलाइन परीक्षा में भी भाग लेकर प्रमाण–पत्र प्राप्त किये हैं।

विद्यालय में बच्चों के प्रत्येक क्षण का लाभ बच्चों को देना मैं न केवल अपना कर्तव्य समझती हूँ बल्कि यह अपने समय का सदुपयोग करने का मेरा सर्वप्रिय तरीका है। ❑

शालिनी कुशवाहा
सहायक अध्यापक
प्राथमिक विद्यालय रसूलाबाद, (अंग्रेजी माध्यम)
विकासखण्ड–चायल, जनपद–कौशाम्बी

आदित्य फिर स्कूल आने लगा

बेसिक विद्यालय बिजनौर, जनपद–लखनऊ

समान्य रूप से मैंने कक्षा में पूछा कि आदित्य स्कूल क्यों नहीं आ रहा है ? आदित्य के सहपाठी मनोज ने बताया कि आदित्य अब अपने माता–पिता के काम में हाथ बटा रहा है और शायद आगे स्कूल पढ़ाई करने कभी ना आए। उसके माता–पिता भी यही चाहते हैं। इससे मेरा मन चिंतित हो उठा और मैंने उसके माता–पिता से घर जाकर मिलने का निर्णय किया। आदित्य के माता–पिता ने बताया कि हमारे गांव में घनश्याम, अवधेश, अतुल जैसे तमाम बच्चे हैं जो बी.ए., एम.ए. पास करके बेरोजगार घूम रहे हैं। जो उनका पारंपरिक खेती का काम था उसमें भी हाथ नहीं बटा रहे हैं। बहन जी हमारी आर्थिक स्थिति ऐसी नहीं है कि हम आठवीं के बाद आदित्य की पढ़ाई का खर्च उठा पाए तो हम क्यों ना अभी से उसे अपने पारंपरिक घरेलू कार्य सिखाएं। अभिभावक से संवाद की प्रक्रिया के उपरांत स्पष्ट हुआ कि वह कक्षा 8 की पढ़ाई को लेकर उत्साहित नहीं है। बच्चे में पढ़ाई की ललक तो थी किंतु इस उम्र में बच्चे संवेदनशील होते हैं। उनका पूरा झुकाव अपने माता–पिता की ओर होता है इसलिए वे माता–पिता के रूझान के अनुसार अपना रूख बदल लेते हैं। आदित्य को विद्यालय ले आना मेरे लिए एक कठिन चुनौती बन गया।

यह चिंता बच्चों के साथ बातचीत के दौरान भी कई बार प्रमुखता से निकल कर आई कि शिक्षण सत्र पूरा होने के समय बच्चों तथा अभिभावकों दोनों में भविष्य को लेकर दुविधा बनी रहती है। इस को ध्यान में रखते हुए मेरे मन में विचार आया कि क्यों ना बच्चों को कक्षा आठ के उपरांत तकनीकी एवं व्यवसायिक ज्ञान की तरफ उन्मुख किया जाए ताकि उनकी शिक्षा भी पूरी हो सके साथ ही उन्हें तकनीक का व्यवहारिक ज्ञान भी मिल सके।

इस संदर्भ में मेरे द्वारा बच्चों तथा उनके अभिभावकों का अभिमुखीकरण उद्यमिता तथा व्यवसायिक शिक्षा एवं कौशल की दिशा में किया गया। कुछ बच्चों व अभिभावकों का भ्रमण औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान में करवा कर उन्हें व्यवसायिक शिक्षा एवं कौशल विकास हेतु प्रेरित किया गया। इसके लिए आई.टी.आई. के शिक्षकों के साथ बच्चों एवं अभिभावकों की वार्ता का आयोजन किया गया। जिसमें भविष्य की संभावनाओं संबंधी जानकारी प्रदान की गई। प्रवेश संबधी औपचारिकताओं के बारे में भी विस्तार से बताया गया। जिससे अभिभावकों में आशा की एक किरण नजर आई। आदित्य के पिता को भी इस भ्रमण और संवाद में शामिल किया गया। इसका परिणाम यह रहा कि आदित्य फिर स्कूल आने लगा।

इन प्रक्रियाओं एवं प्रयासों के परिणामस्वरूप आशा है कि कई विद्यार्थी औद्योगिक कौशल विकास हेतु अग्रसर होंगे तथा प्रवेश लेकर और शिक्षा ग्रहण कर उद्यमिता एवं व्यवसाय स्थापना कर स्वयं का रोजगार स्थापित कर सकेगें। ❑

क्षमा सिंह
सहायक अध्यापिका
बेसिक विद्यालय
बिजनौर क्षेत्र, सरोजिनी नगर, जनपद लखनऊ

खेल द्वारा लघुत्तम समापवर्त्य का ज्ञान

प्राइमरी विद्यालय अजबपुर-मंगावली, जनपद-गाजियाबाद

गणित एक जटिल विषय है जिसे एकाग्र मन और तार्किक शक्ति के प्रयोग द्वारा आसानी से समझ सकते हैं। विशेषकर गणित के किसी भी सूत्र को अगर रोचक विधि जैसे खेल के माध्यम से समझाया जाए तो बच्चे गणित के सूत्रों को आसानी से समझ सकते हैं।

उदाहरण – लघुत्तम समापवर्त्य बच्चों को एक वृत्ताकार मार्ग पर दौड़ लगवा कर समझाया जाता है।

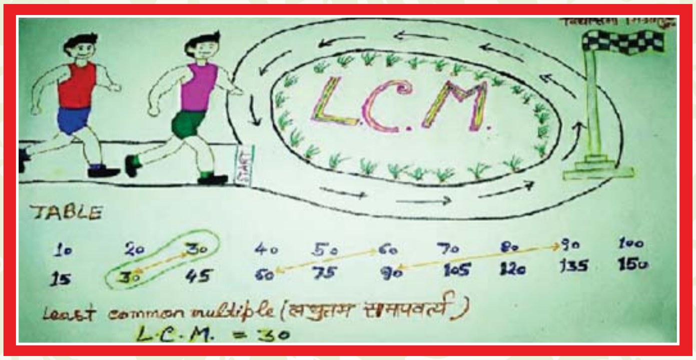

इसमें दो बच्चों की दौड़ प्रतियोगिता कराई जाती है। तेज दौड़ने वाला बच्चा 10 सेकंड में वृत्ताकार मार्ग का एक चक्कर लगा लेता है और थोड़ा कम तेज दौड़ने वाला बच्चा वृत्ताकार मार्ग का 15 सेकंड में एक चक्कर लगा लेता है। यह बच्चे इस वृत्ताकार मार्ग पर लगातार दौड़ते हुए एक निश्चित समय के पश्चात एक दूसरे के पास बार–बार आ जाते हैं। यह निश्चित समय क्या है यह जानने के लिए 10 और 15 का पहाड़ा लिखकर समान अपवर्त्य देखेंगे।

10	20	30	40	50	60	70	80	90	100
15	30	45	60	75	90	105	120	135	150

इसमें 30, 60 और 90 संख्याएं समान अपवर्त्य हैं। अतः इतने समय के अंतराल पर यह दोनों बच्चे दौड़ लगाते हुए इस वृत्ताकार मार्ग पर एक दूसरे के पास आएंगे। इसमें सबसे छोटा समान अपवर्त्य 30 है। अतः इसका लघुत्तम समापवर्त्य अर्थात लीस्ट कॉमन मल्टीपल 30 होगा। यहाँ दो संख्याओं का लघुत्तम समापवर्त्य खेल विधि से प्रस्तुत किया गया है। ❑

विद्योत्तामा मिश्रा
सहायक अध्यापिका
प्राइमरी विद्यालय
अजबपुर–मंगावली, मुरादनगर, गाजियाबाद

भाषा की जान : विराम चिन्ह

आओ हिन्दी विषय को जानें,
उसमें विराम चिन्ह पहचानें।
तुम सब हो इनसे अंजान
ये देते वाक्यों को ज्ञान।
'।' देखो यह है पूर्ण विराम।
पूरा वाक्य करता आराम।।
',' बच्चों अल्प विराम है आया।
अनेक शब्दों को साथ में लाया।।
'!' विस्मयबोधक चिन्ह है ये तो।
ओह! बड़ा आश्चर्य है देखो।।
'?' प्रश्नवाचक बन पूछे ऐसे।
प्रश्न करे ये कब और कैसे।।
';' अर्द्ध विराम की महिमा पूरी।
पूरी बात दो वाक्यों की,
रहे न इसके रहते अधूरी।।
'" ' उद्धरण चिन्ह मुखिया है सबके।
वाक्य पकड़ में रहते इनके।।
'-' योजक चिन्ह है लगता जहाँ पर।
बड़े छोटे का भेद ना वहाँ पर।।
'_' निर्देशक चिन्ह क्या कहे ये जानो।
आगे कुछ विशेष है मानों।।
'{()}' कोष्ठक चिन्ह में शब्द जो बैठे।
पहले शब्द पर जमकर ऐंठा।।
व लाघव चिन्ह है छोटा सा पर।
भरे रखता शब्दों का सागर।।
'^' काकपद त्रुटिपूरक कहलाता।
छूटी बात सब तक पहुंचाता।।
':-' विवरण चिन्ह कहे जो समझो।
विस्तार में बात बतायेंगे तुमको।।
विराम चिन्ह भाषा की जान।
इनसे रहो न अब अंजान।।

लेखिका–डॉ. रेणु देवी
स.अ. प्राथमिक विद्यालय नवादा, हापुड़

जनसहयोग से विद्यालय में स्मार्ट क्लास की स्थापना

प्राथमिक विद्यालय में सूचना संचार प्रौद्योगिकी द्वारा शिक्षा

प्राथमिक विद्यालय कुदैनी, जनपद-अमरोहा

प्राथमिक विद्यालय कुदैनी, विकास क्षेत्र–गजरौला जनपद–अमरोहा प्रदेश के कभी पिछड़े विद्यालयों में शुमार था। वही विद्यालय वर्ष 2018 में राज्यस्तरीय प्रतियोगिता में उत्कृष्ट विद्यालय के रूप में चयनित हुआ। विद्यालय की इस उपलब्धि का श्रेय जाता है, विद्यालय के प्रधानाध्यापक श्री पकंज आर्य को। पंकज आर्य को 31 मार्च, 2015 में इस विद्यालय का प्रधानाध्यापक बनाया गया था। जिस समय आपकी नियुक्ति प्रधानाध्यापक रूप में हुयी उस समय विद्यालय अनेक चुनौतियों का सामना कर रहा था। विद्यालय में भौतिक सुविधाओं का नितान्त अभाव, शैक्षिक स्तर निम्न स्तर का और सबसे बड़ी समस्या जनसहयोग न मिलने की थी। विद्यालय की समस्याओं को आपने चुनौती के रूप में स्वीकार किया।

सबसे पहले आपने शैक्षिक स्तर के उन्नयन का बीड़ा उठाया जिसमें सहयोगी शिक्षकों ने भरपूर सहयोग दिया। बच्चों के शैक्षिक स्तर उन्नयन के लिये उनकी दैनिक उपस्थिति के समय सप्ताह, माह, फल–फूल एवं अंग्रेजी माध्यम से सामान्य वार्तालाप के बारे में सिखाया जाने लगा। छात्र–छात्राओं में वैज्ञानिक अभिरूचि के विकास के लिये

विज्ञान प्रयोगशाला की स्थापना कर उन्हें मॉडल बनाकर शिक्षा दी जाने लगी। छात्रों के शैक्षणिक ज्ञान के लिये अनेक टी.एल.एम. तैयार किये गये, जिनसे उन्हें भाषा गणित और सामान्य जानकारी देने का प्रयास किया गया। अध्ययन को अनेक खेल विधियों के माध्यम से सुगम बनाया गया। पाठ्य पुस्तकों की विषय वस्तु को ई–कन्टेण्ट में परिवर्तित कर उससे रोचक शिक्षा दी जाने लगी। विद्यालय में विभिन्न आई. सी.टी. गतिविधियों के माध्यम से छात्रों को सीखने के लिये प्रेरित किया गया।

प्राथमिक विद्यालय कुदैंनी के बच्चों को अब इण्टरनेट वाट्सेप, फेसबुक और ई–मेल से शिक्षण के साथ उन्हें इसकी जानकारी भी मिल रही है। विद्यालय में हो रहे शैक्षणिक उन्नयन का परिणाम यह रहा कि अभिभावक भी विद्यालय के क्रिया–कलापों में रूचि लेने लगे। उनसे लगातार सहयोग मिला और विद्यालय में **सबके सहयोग से स्मार्ट क्लास की स्थापना हुयी है।** विद्यालय में छात्रों के नामांकन पर भी सकारात्मक प्रभाव पड़ा है।

श्री पंकज आर्य को उनके प्रयास के लिये अनेक अवसरों पर सराहा गया। उनके विद्यालय को उत्कृष्ट विद्यालय के पुरस्कार के साथ ही उन्हें व्यक्तिगत रूप आई.सी.टी. शिक्षक के रूप में राज्यस्तरीय पुरस्कार प्राप्त हुआ है। ❑

श्री पंकज आर्य
प्रधानाध्यापक,
कुदैनी / गजरौला, जनपद–अमरोहा

स्कूल तब और अब : एक सराहनीय प्रयास

प्राथमिक विद्यालय कमता-प्रथम, जनपद-लखनऊ

मैं अनीता त्रिपाठी, प्रभारी प्रधानाचार्य, प्राथमिक विद्यालय कमता प्रथम, नगर क्षेत्र लखनऊ में कार्यरत हूँ। मेरा विद्यालय लखनऊ से फैजाबाद जाने वाली मुख्य सड़क पर चिनहट से पहले कमता नामक स्थान पर स्थित है। नगर क्षेत्र में होने के बावजूद विद्यालय की स्थिति बहुत खराब थी। सबसे बड़ी समस्या थी विद्यालय में बाउन्ड्रीवाल का न होना। कहने को तो बाउन्ड्रीवाल थी मगर ऊंचाई मात्र 02 फीट थी। उसमें कहीं से भी कोई आ जाता था। दूसरी समस्या विद्यालय कैम्पस में एक पुराना खण्डहर था। विद्यालय के पास ही कुछ दूर शराब का ठेका होने के कारण अक्सर रात में शराबी और जुआरी बाउन्ड्री फाँदकर आ जाते थे और खण्डहर में बैठकर शराब पीते और जुआ खेलते थे। सुबह विद्यालय खुलने पर इधर-उधर शराब की खाली बोतलें तथा गन्दगी दिखायी देती थी।

बच्चों के भविष्य और विद्यालय प्रांगण में आये दिन हो रही अव्यवस्था से मैं काफी परेशान थी। मेरी परेशानी का असर मेरे परिवार पर भी पड़ने लगा। एक दिन मेरे पति जो सूचना विभाग, उत्तर प्रदेश में सहायक निदेशक सूचना के पद पर कार्यरत हैं उन्होंने परेशानी का कारण पूछा तो मैंने विद्यालय की समस्या से उन्हें अवगत कराया। यह भी बताया कि मैंने काफी प्रयास किया लेकिन इस समस्या का कोई समाधान नहीं निकल पा रहा है। विद्यालय प्रांगण में गंदगी और खाली शराब की बोतलें देखकर वे भी काफी विचालित हुये। उन्होंने तुरन्त निश्चय किया कि भले ही नगर निगम या अन्य कोई विभाग समस्या के प्रति गम्भीर न हो। मैं खुद ही विद्यालय की समस्या दूर करूंगा। दूसरे दिन से उन्होंने विद्यालय की बाउन्ड्री ऊंची कराने का कार्य प्रारम्भ करा दिया। कुछ दिनों में बाउन्ड्री बन गयी, उसमें बड़ा सा गेट लग गया। अब कोई बाहरी व्यक्ति विद्यालय में बिना अनुमति के नहीं आ सकता था। विद्यालय स्थित खण्डहर को भी उन्होंने साफ कराया। खण्डहर से निकली ईंटो को विद्यालय प्रांगण में खड़ण्जा लगा दिया गया। बाउन्ड्रीवाल की रंगाई-पुताई कराकर विद्यालय का नाम भी लिखवा दिया है। मेरे पति श्री राम मनोहर त्रिपाठी ने स्वयं के संसाधनों से विद्यालय को सुरक्षित करने के साथ विद्यालय को आकर्षण का केन्द्र बना दिया है। विभाग के सहयोग से अन्दर कमरों की भी रंगाई-पुताई करा दी गयी है। शौचालय की भी मरम्मत कराकर उपयोगी बना दिया गया है। पहले जहां विद्यालय में छात्र-छात्रायें आना नहीं चाहते थे, वहीं अब विद्यालय में उपस्थिति 90 प्रतिशत हो गयी है। ❑

अनीता त्रिपाठी
प्रभारी प्रधानाध्यापक,
कमता-प्रथम, नगर क्षेत्र, लखनऊ

सुर्खियों में बेसिक शिक्षा

36,590 शिक्षकों को पांच दिसंबर को नियुक्ति पत्र

लखनऊ | विशेष संवाददाता

शिक्षक भर्ती

- मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ गोरखपुर में बांटेंगे नियुक्ति पत्र
- 69000 भर्ती के पहले चरण में से चुकी 31,277 पदों पर भर्ती

हेडमास्टरों को स्कूल प्रबंधन की ट्रेनिंग देंगे

लखनऊ | विशेष संवाददाता

तैयारी

- प्रशिक्षण एक साल का होगा, इसे जनवरी से शुरू करने की योजना
- प्रधानाध्यापकों की वार्षिक आकलन में भी इसे वरीयता दी जाएगी

परिषदीय शिक्षकों का कैडर विभाजन खत्म होगा: द्विवेदी

दिया भरोसा

गोरखपुर | कार्यालय संवाददाता

डॉ. सतीश द्विवेदी

प्रदेश का एक भी विद्यालय नहीं रहेगा शिक्षक विहीन

सराहनीय काम करने वाले शिक्षकों का किया सम्मान

जासं, लखनऊ: मिशन प्रेरणा के तहत विकासखंड बख्शी के तालाब में सोमवार को शिक्षक संकुलों की मुख्य प्रदर्शन संकेतक आधारित कार्यशाला का आयोजन किया गया। उद्घाटन उप शिक्षा निदेशक बेसिक डॉ. पवन सचान द्वारा किया गया। खंड शिक्षा अधिकारी सतीश कुमार त्रिपाठी ने बताया कि कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य मिशन प्रेरणा के लक्ष्यों की शिक्षक संकुल स्तर पर समीक्षा है।

दरअसल, बेसिक शिक्षा विभाग द्वारा लॉकडाउन की अवधि में बच्चों तक ई-पाठशाला के माध्यम से शिक्षण कार्य किया जा रहा है। एआरपी अनुराग सिंह राठौर ने बताया कि कोविड-19 का पालन करते हुए विकासखंड बख्शी के तालाब के शिक्षकों द्वारा ई-पाठशाला की विभिन्न इकाइयों पर चर्चा व प्रस्तुतीकरण किया गया। कंचन श्रीवास्तव, आराधना मिश्रा, रेखा लकी विश्वकर्मा, अनीता दोहरे के अतिरिक्त दस अन्य शिक्षकों को उनके उत्कृष्ट कार्य के लिए प्राचार्य डाइट द्वारा सम्मानित किया गया। कार्यक्रम में सहायक शिक्षा निदेशक बेसिक पीएन सिंह व जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी दिनेश कुमार, ज्ञानेंद्र शंकर त्रिपाठी, आशुतोष मिश्रा, नीतू खरे, धर्मेंद्र सिंह, राजेश सिंह, सुचिता त्रिपाठी, अनुपमा मंडल, अंजना भारती, नेहा सिंह, निशा सिंह व वंदना डबराल मौजूद रहीं।

29% सामान्य, 46% ओबीसी के अभ्यर्थी चयनित, अनुसूचित जाति के 23 फीसदी को मिली नौकरी

69000 शिक्षक भर्ती में 70% आरक्षित वर्ग के अभ्यर्थी

प्रयागराज | संजीव मिश्र

68500 की पहली लिस्ट में 62% थे आरक्षित वर्ग के

Do not seek any transfer for 2 yrs: CM to new teachers

Says Teachers Should Always Try To Learn

> A primary school teacher is as important for a child as parents, because the teacher lays the foundation for proper development of the child
>
> **Yogi Adityanath** | UP CM

Neha Lalchandani
@timesgroup.com

Lucknow: In an interaction with newly appointed assistant teachers for primary schools on Saturday, chief minister Yogi Adityanath said that a primary school teacher was as important for a child as parents, because the teacher laid the foundation for proper development of the child.

He also acknowledged the importance of having well-educated teachers as they would lead to strengthening of the country's foundation.

Congratulating Bhavna from Badaun, he said that her parents would be proud of her.

"Your parents educated you and it is now your responsibility to use your training and skills for the growth and development of young children," he said, addressing teachers.

He similarly thanked the family of Lalita Tripathi from Hardoi for letting her study even though she was a girl and appreciated Tripathi's commitment to the field of education for starting as a primary school teacher even though she has an MSc degree in chemistry.

At least three of the candidates he interacted with on Saturday had a BSc degree while one had also completed her BEd, along with having done a basic training certificate course.

The CM also warned the teachers against asking for transfers in the beginning of their careers, saying that nobody should be looking to move districts for at least two years.

"Some of you are posted in districts which are not your home districts. I hope you will focus on your work there and not ask for transfers for at least two years," he said, while speaking to Namita Singh from Gonda, who originally hails from Azamgarh.

Yogi also encouraged the new appointees to continue their process of learning, saying that they should not act like frogs in a well.

"Teachers should always try to learn and continue to upgrade skills and informa-

CM Yogi stresses on the need for refresher courses

▶Continued from P 1

It was important for us to complete the recruitment process in a transparent manner because there are 1.58 lakh primary schools in the state. If we want to compete in any sector at an international level, we will fail unless our education system is robust," Yogi said.

Asking newly-appointed teachers to become a vehicle of change, the CM said some of them would have to teach in rural areas where there was shortage of teachers and it was up to them to provide an environment conducive to learning.

In a word of advice to teachers, Yogi said: "It should be ensured that children attend school on their own and are not forced. If you scold them, they won't turn up. Many children have parents who have no formal education. Teachers will have to be sensitive to their background and simplify courses so that they enjoy learning."

He stressed on the need for refresher courses for teachers, saying they need to keep abreast of developments in education and information. "Once a teacher, always a teacher," he said.

"Under Operation Kayakalp, 50 lakh children had joined or returned to school in three years before the Covid-19 pandemic. The government distributed uniform, shoes, books and sweaters to children to encourage them to attend school. UP has 1.8 lakh students under the basic education department. Some states do not even have that much of population," he said.

"There is also the need to improve the condition of Basic Education Council, get rid of 'paan' stains on walls, clean up buildings and make working a pleasant experience for teachers," he added.

tion. All of you have worked really hard to be here and I hope there will no longer be any need for any teacher to go on protest," he said, referring to earlier protests by Shiksha Mitras, some of whom had taken the test and qualified to be appointed teachers.

बेसिक शिक्षा का पाठ्यक्रम आसान बनाएं

सीएम ने कहा- बच्चों में पिटाई का भय आया तो फेल हो जाएगा 'स्कूल चलो अभियान'

69 हजार सहायक अध्यापक भर्ती | 36,590 चयनित शिक्षकों की सूची भी जारी

प्रयागराज। बेसिक शिक्षा परिषद ने परिषदीय विद्यालयों के लिए 69 हजार सहायक अध्यापक भर्ती में 31,277 पदों पर भर्ती के बाद शेष 36,590 पदों को भरने के लिए अनंतिम सूची जारी कर दी है। सचिव बेसिक शिक्षा परिषद की ओर से 31 मई को 67867 पदों नियुक्ति के लिए जिला आवंटन सूची जारी की गई थी। सुप्रीम कोर्ट से शेष 36590 पदों को भरने की अनुमति मिलने के बाद इन पदों पर नियुक्ति के लिए दो से चार दिसंबर के बीच काउंसिलिंग तिथि तय की गई है। काउंसिलिंग में अभ्यर्थियों के प्रमाण पत्रों को मूल आवेदन से मिलाकर नियुक्ति पत्र जारी किए जाएंगे।

2 से 4 दिसंबर तक नियुक्ति के लिए होगी काउंसिलिंग

31,277 पदों पर पहले ही हो चुकी है भर्ती, शेष पदों पर अब होगी नियुक्ति

काउंसिलिंग में अभ्यर्थी सभी शैक्षिक अभिलेखों की दो सेट में स्व प्रमाणित छाया प्रति, चार पासपोर्ट साइज फोटोग्राफ एवं सचिव उत्तर प्रदेश बेसिक शिक्षा परिषद प्रयागराज के पदनाम से आवेदन शुल्क (सामान्य, ओबीसी के लिए 500, एससी-एसटी के लिए 200 एवं विकलांग के लिए निःशुल्क) का बैंकड्राफ्ट लेकर शामिल होंगे। काउंसिलिंग में 100 रुपये के नोटरी शपथपत्र पर इस आशय की घोषणा करनी होगी कि ऑनलाइन आवेदन में भरी सभी सूचनाएं सही हैं। ब्यूरो

एनआईसी एक दिसंबर को जारी करेगा चयन, जिला आवंटन सूची

सचिव बेसिक शिक्षा परिषद प्रताप सिंह बघेल ने बताया कि एनआईसी की ओर से अभ्यर्थियों के चयन एवं जनपद आवंटन की सूची एक दिसंबर को जारी की जाएगी। अभ्यर्थी upbasiceduboard.gov.in पर एक दिसंबर को पूरी सूची देख सकते हैं। अभ्यर्थियों को वही जिले आवंटित किए जाएंगे जो उन्हें 31 मई को जारी सूची में आवंटित किए गए थे।

नहीं मांगेंगे अंतर्जनपदीय स्थानांतरण

जनपद में नियुक्ति के उपरांत अंतर्जनपदीय स्थानांतरण की मांग नहीं करेंगे। सचिव की ओर से जारी सूचना में कहा गया कि शिक्षामित्रों को उनके कार्य अनुभव के लिए दिए जा रहे 25 अंक के भारांक के संबंध में ज्ञात कर लिया जाए कि वह परिषदीय विद्यालयों में काम करने की शर्त को पूरी करते हैं कि नहीं।

अभिलेखों में मानवीय त्रुटि पर मिलेगा मौका

नाम में वर्तनी की गलती वाले चयनित अभ्यर्थियों के लिए नौ, 10 व 11 को काउंसिलिंग

69 हजार शिक्षक भर्ती का मामला

इन्हें मिलेगा मौका

इनका चयन होगा निरस्त

शिक्षामंत्री के मामले में यह हुआ निर्णय

यह भी हुए फैसले

पांच दिसंबर को ही आदेश और नियुक्ति पत्र

'सरकार ने जो कहा वह कर के दिखाया'

36,590 शिक्षकों को अपॉइंटमेंट लेटर देने की शुरुआत

69,000 पदों पर शिक्षक भर्ती प्रक्रिया पूरी

सीएम योगी ने शिक्षकों को बांटे नियुक्तिपत्र

सीएम योगी द्वारा नियुक्तिपत्र बांटे जाने के दौरान बेसिक शिक्षा मंत्री सतीश द्विवेदी (सबसे दाएं) भी मौजूद रहे।

> यह मिशन रोजगार के प्रति हमारी प्रतिबद्धता है। यह आगे भी इसी तरह जारी रहेगी।
>
> –योगी आदित्यनाथ, सीएम

'दुनिया में लोग नौकरी खो रहे पर यूपी में मिल रही'

'परिवर्तन के वाहक बनें नए शिक्षक'

'शिक्षक आजीवन शिक्षक होता है'

दूसरे के दस्तावेज पर नौकरी कर रहा शिक्षक बर्खास्त, होगी एफआईआर

सूरतगंज ब्लॉक के प्राइमरी स्कूल भिटौली में 10 साल से कर रहा था नौकरी

नए शिक्षकों को अंग्रेजी माध्यम के स्कूलों में दे दी सीधी तैनाती

नियमों की अनदेखी : हिंदी व अंग्रेजी माध्यम के विद्यालयों में तैनाती के हैं अलग नियम

यह है तैनाती का नियम

इनका चयन, पर नहीं दी तैनाती

पूर्व माध्यमिक विद्यालय सुल्तानपुर, वि0क्षे0- बहेड़ी (बरेली)

STOP CHILD LABOUR

हम बनाएंगे
प्रेरक प्रदेश

मिशन प्रेरणा

उत्तर प्रदेश, प्रेरक प्रदेश

मुद्रक : प्रकाश पैकेजर्स, 257—गोलागंज, लखनऊ